ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 02 फरवरी 2014 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार 02 फरवरी 2014 से 08 फरवरी 2014

मा शु.–05 ● वि० सं०–2070 ● वर्ष 78, अंक 93, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 190 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,114 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

प्रादेशिक उप सभा बिहार ने मनाया सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव

51 कुण्डीय विश्वकल्याण महायज्ञ से की प्रार्थना

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, बिहार के तत्वावधान में बी.एस. डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, मील रोड, आरा, बिहार में 'भव्य सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव एवं 51 कुण्डीय विश्वकलयाण महायज्ञ' का आयोजन किया गया।

प्रतिदिन तीन सत्रों में आयोजित होने वाले इस महायज्ञ की शुरूआत यज्ञ–हवन तथा आर्य जगत् की विदुषी बहन लक्ष्मी भारती एवं उनकी शिष्याओं द्वारा उच्चारित वैदिक मंत्रों के साथ हुआ। यज्ञोपरान्त डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल्स बिहार जोन–2 के निदेशक डॉ. यू. एस. प्रसाद जी और आर्य प्रतिनिधि उपसभा, बिहार के प्रधान श्री गंगा प्रसाद जी के कर कमलों द्वारा ध्वजारोहण कर कार्यक्रम की विधिवत शुरूआत की गयी।

द्वितीय सत्र में मुख्य अतिथि श्री अमरेन्द्र प्रताप सिंह, उपसभापति, बिहार विधान सभा ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि स्वामी दयानन्द एक धार्मिक सांस्कृतिक संक्रमण काल की उपज थे। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व को आर्य बनाने के लिए वैदिक धर्म को आधार बनाया। समारोह के विशिष्ट वक्ता श्री वेद प्रकाश क्षोत्रिय ने स्वामी जी ने जीवनादर्शों को रेखांकित किया और उनकी विश्व प्रसिद्ध रचना सत्यार्थ प्रकाश को दीपक से भी आगे सूर्य की तरह प्रकाश फैलाने वाला बताया। संध्याकालीन सत्र संध्या उपासना के साथ शुरु होकर विदुषी बहन लक्ष्मी भारती के भजनोपदेश तथा क्षोत्रिय जी के ओजपूर्ण वक्तव्यों से सम्पन्न हो गया।

द्वितीय दिवस यज्ञ–हवन के पश्चात् राष्ट्रीय कवि श्री सारस्वत मोहन मनीषी जी ने अपने संबोधन कहा कि राष्ट्र भयंकर दौर से गुजर रहा है, पड़ोसी हमें आँखे दिखा रहे हैं और हम अपनी पीठ खुद थपथपा रहे हैं। सायंकालीन सत्र में संध्या उपासना के बाद आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के महामंत्री श्री युत् एस. के. शर्मा जी का पदार्पण हुआ। अपने आशीर्वचनों उन्होंने कहा– आर्यसमाज हमारी माँ है। डी.ए.वी. संस्थाओं ने आर्य समाज से वह सब कुछ लिया है जो एक बच्चा अपनी माँ से लेता है। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि कोई काम छोटा, बड़ा या कठिन नहीं होता बल्कि यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम उस कार्य को कैसे और किस भाव से करते हैं। इस अवसर 20 से अधिक स्थानीय आर्य समाजों के विद्वानों, और कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया गया।

तृतीय और अन्तिम दिवस की शुरूआत यज्ञ–हवन के साथ सम्पन्न हुई। तत्पश्चात समापन समारोह में डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल्स के तीनों प्रक्षेत्रों के निदेशक, डी.ए.वी. के विभिन्न विद्यालयों के प्राचार्य, प्राचार्या, धर्माचार्यों आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा के प्रधान श्री गंगा प्रसाद जी, विभिन्न विद्यालयों से पधारे बच्चे, शिक्षण, शिक्षिकाओं तथा स्थानीय जन समूह को संबोधित करते हुए आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री एस.के. शर्माजी ने इस जानपदीय क्षेत्र की सराहना की ओर कहा भव्यता और श्रेष्ठता दोनों दों चीजें हैं। भव्यता अच्छी है मगर श्रेष्ठता उससे भी अच्छी है। यही श्रेष्ठता हमें यज्ञ–कर्म से जोड़ती है। सफल आयोजन के लिए उन्होंने डी.ए.वी. विद्यालय के सभी लोगों की भूरि–भूरि प्रशंसा की। इसके बाद वैदिक ध्वज का अवतरण किया गया।

तत्पश्चात् अंतिम सत्र शोभायात्रा का रहा। ओ३म् के झण्डे के साथ वैदिक विचारों के आधार पर बच्चों द्धारा तैयार की गई झाँकियों के प्रदर्शन ने पूरे नगर में धूम मचा दी। यह शोभा यात्रा लगभग 40 ट्रैक्टरों पर विभिन्न प्रकार के सोद्देश्य झाँकियों को लेकर शहर के विभिन्न मार्गों से गुजरी। झाँकी में रथ पर विराजमान श्री एस.के शर्मा जी और गंगा प्रसाद जी का नगर के गणमान्य लोगों ने जगह–जगह पुष्पवर्षा, माला, बुके और तिलक द्धारा स्वागत किया। तीन दिवसीय कार्यक्रम स्वामी दयानन्द और सत्यार्थ प्रकाश के उच्च जीवनादर्शी और उद्देश्यों को एक नई दिशा देने के विशिष्ट प्रयास के रूप में सम्पन्न हुआ।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – **श्री पूनम सूरी**

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार 02 फरवरी, 2014 से 08 फरवरी, 2014

त्रिविध पवित्रतो

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

पऋतस्य गोपा न दभाय सुक्रतुः, त्रीष पवित्रा हृद्यन्तरा दधे।
विद्वान्त्स विश्वा भुवनाभि पश्यति, अवाजुष्टान् विध्यति कर्ते अव्रतान्।।

ऋग् ९.७३.८

ऋषिः **पवित्रः आङ्गिरसः** । देवता **पवमानः सोमः** । छन्दः **जगती** ।

● (**ऋतस्य**) सत्य का, (**गोपाः**) रक्षक, (**सुक्रतुः**) शुभ प्रज्ञानों और शुभ कर्मों वाला (**सोम प्रभु**), (**दभाय न**) हिंसा या उपेक्षा किये जाने योग्य नहीं है।, (**सः**) वह, (**हृदि अन्तः**) हृदय के अंदर, (**त्री पवित्रा**) तीन पवित्रों को–विचार, वचन और कर्म की पवित्रताओं को, (**आ दधे**) स्थापित करता है।, (**विद्वान्**) विद्वान्, (सः) वह, (**विश्वा**) समस्त, (**भुवना**) भूतों को, (**अभि पश्यति**) देखता है, (**अजुष्टान्**) अप्रिय, (**अव्रतान्**) व्रत–हीनों को, (**कर्ते**) अंध कूप में, (**विध्यति**) धकेलता है।

● 'सोम' परमात्मा 'ऋत' का संरक्षक और अनृत का घर्षक है। जहाँ भी वह सत्य को पाता है, उसे प्रश्रय देता है। वह 'सुक्रतु' है, शुभ प्रज्ञानों, शुभ विचारों, शुभ संकल्पों और शुभ कर्मों से युक्त है और अपने सम्पर्क में आनेवाले मानवों को भी वैसा ही बनाना चाहता है। परन्तु मानव को सत्य पथ का पथिक तथा 'सुक्रतु' वह तभी बना सकता है, जब मानव उसकी शरण में जाए, उसे आत्म–समर्पण करे, उसे अपने हृदय–मन्दिर में उपास्य देव के रूप में प्रतिष्ठित करे। यदि मानव जीवन में उसकी हिंसा या उपेक्षा ही करता रहेगा, तो उससे मिलनेवाली 'सत्य' और 'शुभक्रतु' की प्रेरणा से वह वंचित ही रहेगा। अतः 'पावनकर्ता' सोमप्रभु किसी से कभी भी उपेक्षणीय नहीं है।

'सोम' प्रभु जब अपने उपासक को पवित्र करना चाहता है, तब उसके हृदय में तीन 'पवित्रों' को स्थापित कर देता है। वे तीन हैं विचार की पवित्रता, वाणी की पवित्रता और कर्म की पवित्रता। मनुष्य के विचार ही वाणी और कर्म के रूप में प्रतिफलित हुआ करते हैं, अतः वाणी और कर्मों को पवित्र बनाने के लिए सर्वप्रथम विचारों की पवित्रता आवश्यक है। यदि किसी मनुष्य के विचार अपवित्र हैं, मन में वह पाप–चिंतना करता रहता है, तो वाणी या कर्म से पाप न भी करे, तो भी वेद–शास्त्र उसे पापी कहते हैं। अतः प्रभु प्रथम अपने कृपापात्र मनुष्य से मन को पवित्र करता है, फिर उस पवित्रता को क्रमशः वाणी और कर्म में भी प्रतिमूर्त कर देता है। 'सोम प्रभु' विद्वान् है, वह प्रत्येक प्राणी की गतिविधि को सूक्ष्मता के साथ देखता है। उसकी आँख से कुछ भी नहीं छिपता। अपनी विवेक–चक्षु से साधु और असाधु की पहचान कर लेता है। साधुओं को सत्कर्म में प्रोत्साहित करता है। जो व्रतहीन हैं, किसी भी शुभ–कर्म के संकल्प से रहित हैं, अतएव जो दुर्वृत्त, अप्रिय और असेव्य हैं, उन्हें दुर्गति के अन्धकूप में धकेलता है, दण्डित करता है। आओ, हम 'पवमान सोम' को अपने जीवन की पतवार सौंपकर मन, वचन और कर्म से पवित्र बनें।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

तत्त्व-ज्ञान

● महात्मा आनन्द स्वामी

जब तक संसारी भोग पदार्थों से वैराग्य नहीं होता तब तक तत्त्वज्ञान को समझने की बुद्धि नहीं होती। इस सन्दर्भ में श्री राम की व्यथा कथा का वर्णन चल रहा था। मृगतृष्णा के समान भटकाव, लक्ष्मी (धन सम्पत्ति) की वृद्धि से दुःख, आयु की अविश्वसनीयता, शरीर को आत्मा मान लेना, इन सब की बात कर के अहंकार के दुष्परिणामों की चर्चा की। तृष्णा क्या खेल खेलती है इस पर भी राम ने प्रकाश डाला। तृष्णा का कारण तो मानव शरीर है इसलिए मानव देह की दयनीय अवस्था का दुःख सुनाया और फिर काल गति की कथा कही।

इसके पश्चात् संसारी लोगों की दयनीय अवस्था का वर्णन किया। श्री राम पूछने लगे कि इस जगत् के आदि और अन्त का पारमार्थिक तत्त्व है क्या?

स्वामी जी ने बताया कि सर्ग 26 के श्लोक 10 से लेकर 19 तक जिस दशा का वर्णन करते हैं वही दशा दुनिया के लगभग सभी देशों और प्रायः सभी मनुष्यों की है। तत्त्व ज्ञान प्राप्त किए बिना इस स्थिति से निजात नहीं पायी जा सकती।

तत्त्व ज्ञान क्या है और कैसे लोग इसे प्राप्त कर सकते हैं इसका वर्णन आगे होगा...

तत्त्वज्ञान का अधिकारी कौन ?

तत्त्वज्ञान प्राप्त किये बिना न तो सांसारिक दुःखों से छुटकारा हो सकता है, और न ही शान्ति प्राप्त हो सकती है। तत्त्वज्ञान की ऊँची मंजिल तक पहुँचाने से पूर्व यह आवश्यक है कि पहले वहाँ तक पहुँचने का अपने–आपको अधिकारी बनाया जाय। वास्तविक तत्त्व क्या है ? यह तो तत्काल वर्णन हो सकता है, परन्तु जब तक बुद्धि उसे ग्रहण करने योग्य न बने तब तक उसके वर्णन का कोई लाभ न होगा। पीछे जितने अध्याय लिखे गये हैं, उनका प्रयोजन यही है कि किसी प्रकार से हम उस अवस्था में पहुँच जायँ जहाँ पहुँचकर तत्त्व के वास्तविक रूप को भली–भाँति समझ सकें।

प्रारम्भ में यदि वासना–क्षय तथा मन के लय का वर्णन हुआ तो इसीलिए, क्योंकि मन की एकाग्रता के बिना इस तत्त्व की समझ आ ही नहीं सकती; फिर शरीर को स्वस्थ रखने के लिए आहार, निद्रा, ब्रह्मचर्य की बात छेड़ी तो इसी उद्देश्य के लिए। प्राणायाम तथा ध्यान का प्रसंग छिड़ा तो इसी कारण से। श्रेय तथा प्रेय दो मार्गों की कथा आई तो इसी प्रयोजन से। शरीर और लोक के तत्त्वों की समानता का वर्णन भी इसीलिए हुआ। सृष्टि–तत्त्व और सृष्टि–विज्ञान को बीच में लाना भी इसीलिए आवश्यक समझा गया तथा भगवान् राम के हृदय की व्यथा की गाथा भी इसीलिये सुनाई गई ताकि ज्ञान, अभ्यास एवं वैराग्य द्वारा धीरे–धीरे मनुष्य तत्त्वज्ञान को प्राप्त करने का अधिकारी बने और इस अध्याय में कुछ और मर्म की बातें इसीलिये लिखी जा रही हैं ताकि हम पूर्णरूपेण अधिकारी बन सकें।

तत्त्वज्ञान का मनुष्यमात्र को अधिकार

वैसे तत्त्वज्ञान का अधिकार मनुष्यमात्र को है, इसमें किसी के लिए कोई रुकावट नहीं। गंगातट पर आज कितना शीतल, सुन्दर पवन चल रहा है! इस पवन का सेवन करने के सभी अधिकारी हैं। परन्तु जिनके शरीर दुर्बल हैं, शीत को सहन करने की शक्ति नहीं रखते, ज्वरग्रस्त हैं, पहले ही जिन्हें निमोनिया हो रहा है, कासक्षय के जो रोगी हैं, वे तो इस सुन्दर शीतल पवन के सेवन का अधिकार नहीं रखते। इसी प्रकार तत्त्वज्ञान का अधिकार तो सबको है, परन्तु इसको प्राप्त करने के पात्र वे होंगे जो सर्वथा स्वस्थ हैं, मन तथा आत्मा जिनका तत्त्वज्ञान की शीतलता को सहन करने के योग्य बन चुका है क्योंकि यह तत्त्वज्ञान तो फिर मनुष्य को परमानन्द तक पहुँचा देता है।

तत्त्वज्ञान के चार साधन

तत्त्वज्ञान विकृतिरूप प्रकृति से

छुटकारा दिलाकर मोक्ष–पद प्राप्त करा सकता है। श्री शंकराचार्य से जब यह पूछा गया कि मोक्ष के साधन क्या हैं ? तो इसके अर्थ यही थे कि तत्त्वज्ञान प्राप्त करने के कौन–से साधन हैं? इसके उत्तर में श्री शंकराचार्य ने ये चार साधन बतलाये थे :

1. नित्यानित्यवस्तुविवेकः।

2. इहामुत्रार्थफलभोगविरागः।

3. शमदमादिषट्कसम्पत्तिः।

4. मुमुक्षुत्वं चेति।

1. नित्य और अनित्य पदार्थों का भिन्न–भिन्न ज्ञान अर्थात् आत्म और अनात्म वस्तुओं का विवेक।

2. इस लोक के और परलोक के और उनसे होनेवाले फलों में वैराग्य अर्थात् संसार–यात्रा श्रेय–मार्ग से करते हुए या निःस्वार्थ भाव से निष्काम होकर प्रेय–मार्ग पर चलते हुए सर्वथा वैराग्य–वृत्ति बना लेना।

3. शम, दम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा और समाधान, इन छः साधनों का सम्पादन।

4. मोक्षपद की इच्छा अर्थात् 'मैं सांसारिक दुःखों से सर्वथा छुटकारा पाकर मुक्त हो जाऊँ', जब ऐसी तीव्र तथा उत्कट इच्छा हो जाती है तो उसे मुमुक्ष कहा जाता है।

1. विवेक

सबसे पहला साधन है नित्यानित्यवस्तु–विवेक। नित्य वस्तु केवल तीन हैं – 1. ईश्वर, 2. जीव, 3. प्रकृति; शेष सब दृश्यमान संसार अनित्य है। श्री कृष्ण भगवान् ने भी गीता के अध्याय 13 में तीन ही तत्त्व नित्य कहे हैं। पहले श्लोक में परमात्मा और दूसरे में प्रकृति तथा जीवात्मा।

ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः परमुच्यते।
ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य विष्ठितम् ।। 17 ।।
प्रकृतिं पुरुषं चैव विद्ध्यनादी उभावपि।
विकारांश्च गुणांश्चैव विद्धि प्रकृतिसम्भवान् ।। 19 ।।

'वह ब्रह्म ज्योतियों का भी ज्योति एवं माया से अति परे कहा जाता है तथा वह परमात्मा बोधस्वरूप और जानने के योग्य है एवं तत्वज्ञान से प्राप्त होनेवाला और सबके हृदय में स्थित है।। 17 ।।

प्रकृति अर्थात् त्रिगुणमयी माया और जीवात्मा – इन दोनों को तू अनादि जान और राग–द्वेषादि विकारों को तथा त्रिगुणात्मक सम्पूर्ण पदार्थों की प्रकृति से ही उत्पन्न हुए जान'।। 19 ।।

इसके अतिरिक्त गीता के अध्याय 15 में फिर यह कहा है :

उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः।
यो लोकत्रयमाविश्य बिभर्त्यव्यय ईश्वरः ।। 17 ।।

'उन दोनों से उत्तम पुरुष तो अन्य ही है कि जो तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण–पोषण करता है एवं 'अविनाशी परमेश्वर और परमात्मा' ऐसा कहा गया है।'

यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः।
अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः ।। 18 ।।

'मैं नाशवान् जड़वर्ग क्षेत्र से तो सर्वथा अतीत हूँ और माया में स्थित अविनाशी जीवात्मा से भी उत्तम हूँ, इसलिये लोक में और वेद में भी पुरुषोत्तम नाम से प्रसिद्ध हूँ।'

श्वेताश्वतरोपनिषद् के ऋषि ने तो बड़े सुन्दर ढंग से ईश्वर, जीव और प्रकृति के नित्य, अनादि होने का वर्णन किया है। पहले ही अध्याय के 10वें वाक्य में यह आदेश है:

क्षरं प्रधानममृताक्षरं हरः, क्षरात्मानावीशते देव एकः।
तस्याभिध्यानाद्योजनात्तत्त्वभावाद् भूयश्चान्ते
विश्वमायानिवृत्तिः ।। 10 ।।

'प्रकृति परिणामिणी (बदलती रहनेवाली) है। हर (पुरुष) अमृत है और अपरिणामी है। इन दोनों प्रकृति और पुरुष पर एक देव ईशन (शासन) करता है। उस एक के ध्यान से, उसमें जुड़ जाने से, तन्मय हो जाने से फिर अन्त में सारी माया हट जाती है (सब धोखे मिट जाते हैं)।'

फिर 12वें वाक्य में यह आदेश है:

एतज्ज्ञेयनित्यमेवात्मसंस्थं, नातः परं वेदितव्यं
हि किञ्चित् ।
भोक्ता भोग्यं प्रेरितारं च मत्वा, सर्वं प्रोक्तं
त्रिविधं ब्रह्ममेतत् ।। 12 ।।

'इसको जानो जो सदा तुम्हारे आत्मा में वर्तमान है; इससे परे कुछ जानने योग्य नहीं है। भोक्ता (जीव), भोग्य (प्रकृति और उसके कार्य) और प्रेरक (ईश्वर) को समझकर सब साफ हो जाता है। यह त्रिक् ब्रह्म–सम्बन्धी है।' इन दोनों स्थलों पर श्वेताश्वतर ऋषि ने ईश्वर, जीव, प्रकृति, तीनों का वर्णन भोक्ता, भोग्य और प्रेरक शब्दों से स्पष्ट किया है।

अविद्या के चार रूप

अब जो लोग विवेक से काम नहीं लेते, वे अनित्य पदार्थों में नित्य और नित्य में अनित्य भावना करके भटकते हैं। विवेक के स्थान में वे अविद्या के जाल में फँस जाते हैं। अविद्या का लक्षण ही यह है :

अनित्याशुचिदुः ख नां नात्मसु
नित्यशुचिसुखात्मख्यातिरविद्या ।।

यो० द० साधनपाद 5 ।।

'**अनित्य**, अपवित्र, दुःख और अनात्मा में नित्य, पवित्र सुख और आत्मा की प्रतीत ही 'अविद्या' है।'

अनित्य = यह समझ लेना कि मेरा शरीर नित्य रहेगा, यह दृश्यमान सृष्टि सदा से है और इसी प्रकार बनी रहेगी, मैंने अपना जो वैभव बनाया है, अपनी पार्टी बनाकर जो राज्य स्थापित किया है, जो सम्बन्धी, मित्र और सहायक बनाये हैं, ये इसी प्रकार मेरे बने रहेंगे – ऐसा जो मिथ्या ज्ञान है, यह अविद्या ही है। यह अविद्या ही सारे कष्टों–क्लेशों की जननी है, जिसमें सबसे पहला भ्रान्त विचार यह है कि अनित्य को नित्य समझ लिया जाय।

अशुचि = अपवित्रता ही अशुचि है। अपवित्र वस्तुओं को पवित्र समझ बैठना और पवित्र हैं उनको अपवित्र, यह अविद्या का दूसरा रूप है। अब देखिये, यह मानव–शरीर मल–मूत्र ही का समुदाय तो है ! परन्तु इसे पवित्र समझ लिया जाता है और इसकी पालना के लिए जीवों का वध करना पड़े तो इस वध को भी अच्छा समझा जाता है। असत्य–भाषण से यदि पालना होती हो तो झूठ बोलना आवश्यक समझ लिया जाता है। ऐसे ही सत्य विद्या, ब्रह्म–विद्या, सत्संग, प्रभु भजन और परोपकार को ढोंग समझकर इन पवित्र वृत्तियों के विरुद्ध भी कथन किया जाता है। जितेन्द्रियता तो एक अत्यन्त पवित्र तप है। इसपर भी हास्य किया जाता है और जितेन्द्रियता को असम्भव तथा 'बर्थ कण्ट्रोल' जैसे गन्दे कार्य को अच्छा ही नहीं समझा जाता अपितु उसका प्रचार भी किया जाता है। चोरी, हिंसा, चोरबाज़ारी अथवा भ्रष्टाचार से कमाया धन अपवित्र है; परन्तु इन्हीं साधनों से कमाये धन को अच्छा समझना अन्याय, एक महापाप और निकृष्ट अपवित्र वृत्ति है क्योंकि अन्याय से अपना स्वार्थ सिद्ध करना, इसी को पवित्र जान लेना, किसी का भी अधिकार छीनना अपवित्र कार्य है। किसी देश या प्रदेश को राक्षसी शक्ति, बहुमत या धोखे से अपने अधिकार ले आना, अपनी गुटबन्दी या पार्टी का बल बढ़ाने के लिए अत्याचार को कानून का रूप देकर मनुष्यों को कारागार में डाल देना अत्यन्त घृणित वृत्ति है। पर इसी वृत्ति को देश के लिए बहुत लाभदायक, आवश्यक और पवित्र समझना, इसी प्रकार के और कार्यों को पवित्र मानकर उन्हीं में प्रयत्नशील रहकर अपने–आपको कृतकृत्य समझना यह अविद्या का दूसरा रूप है।

अविद्या के इस रूप ने आज इतना भयंकर रूप धारण कर लिया है कि हर बुरे व्यसन को अच्छा और अच्छे को बुरा समझा जाने लगा है। मद्यपान आज की समाज–सोसायटी में सभ्यता का चिह्न है। ताश खेलना, सिनेमा देखना, झूठ–मक्कारी से धन एकत्र करना बुद्धिमत्ता है। मद्यपान, मांसभक्षण, ताश, सिनेमा से जो दूर रहता है वह सोसायटी के अयोग्य और बुद्धू समझा जाने लगा है। यह अविद्या के रूप की पराकाष्ठा है।

अविद्या का तीसरा रूप दुःख को सुख और सुख को दुःख समझना है। जितने विषय हैं वे सब दुःख ही हैं, परन्तु विषयों की पूर्ति के लिए मानस इतना लिप्त हो जाता है कि उनसे निकलना अत्यन्त कठिन हो जाता है। तृष्णा, काम, क्रोध, मोह, लोभ, शोक, ईर्ष्या, द्वेष आदि ऐसे विषय हैं जिनमें पड़कर मानव गीली लकड़ी की तरह सदा जलता ही रहता है, फिर भी वह इन्हीं के पीछे पड़ा रहता है कि अब सुख मिल जायेगा, परन्तु सुख के स्थान पर दुःख ही पल्ले पड़ता है।

अविद्या का तीसरा रूप दुःख को सुख और सुख को दुःख समझना है। जितने विषय हैं वे सब दुःख ही हैं, परन्तु विषयों की पूर्ति के लिए मानस इतना लिप्त हो जाता है कि उनसे निकलना अत्यन्त कठिन हो जाता है। तृष्णा, काम, क्रोध, मोह, लोभ, शोक, ईर्ष्या, द्वेष आदि ऐसे विषय हैं जिनमें पड़कर मानव गीली लकड़ी की तरह सदा जलता ही रहता है, फिर भी वह इन्हीं के पीछे पड़ा रहता है कि अब सुख मिल जायेगा, परन्तु सुख के स्थान पर दुःख ही पल्ले पड़ता है।

राजनीति के क्षेत्र में अविद्या

राजनीति के क्षेत्र में अविद्या के इस रूप को देखिये तो स्पष्ट हो जायेगा। इस भ्रम ने कि देश–विभाजन से सुख हो जायेगा और हिन्दू–मुस्लिम समस्या ठीक हो जायेगी, कितना बड़ा भारी दुःख उत्पन्न कर दिया! ऐसे ही यह भ्रम कि कश्मीर का प्रश्न सुरक्षा कौंसिल में ले–जाने से भारत का यह दुःख शीघ्र मिट जायेगा, कितना भयंकर सिद्ध हो रहा है! ऐसे ही राजनीति के क्षेत्र में और कितने ही भ्रम हैं जिन्हें सुख समझा गया, परन्तु वे दुःख ही सिद्ध हुए। थोड़ा दृष्टि को और विशाल कीजिए तो प्रकट हो जायेगा कि दुनिया के देशों में आज जो अशान्ति, वैमनस्य तथा युद्ध की अग्नि चमक रही है, इसका मूल कारण यही है कि दुनिया अविद्या के इस तीसरे रूप के जाल में फँस चुकी है। दुःख को सुख और सुख को दुःख समझा जाने लगा है। माया, धन, रोटी, ऐटम बम, युद्ध–सामग्री, शारीरिक लाभ, इन्हीं को सुख समझा जा रहा है। प्रभु–भक्ति, दया, दान, परोपकार, शान्ति, अहिंसा तथा तप आदि को जंगली लोगों की कथाएँ मानकर इन्हें दुःख समझा जाने लगा है।

शेष अगले अंक में....

हे आत्मन्, सावधान

●रमेश चन्द्र पाहूजा

न जाने क्यों इस भौतिक जगत् की चकाचौंध, भागदौड़, कोलाहल के मध्य रहते हुए भी, कुछ खाली–खाली सा, कुछ अधूरा सा लगता है। ईश्वर की महती कृपा है, घर है, सुन्दर परिवार है, जीवन–रूपी यात्रा के लिए सब सुख–साधन भी हैं परन्तु फिर भी आत्मा को एकान्त की तलाश है। ऐसा एकान्त जहाँ मन के संकल्प–विकल्प की गति धीमी पढ़ जाये, जहाँ संकल्प–विकल्प को एक दिशा मिल जाये। आइये, दूर कहीं पहाड़ों की वादियों में खो जाते हैं। चारों ओर बादल ही बादल हैं। जैसे ही शीतल पवन का झोंका आता है, बादल की एक घटा शरीर को छू जाती है, ऐसा आभास होता है कि परमपिता परमात्मा ने अपना सारा प्यार, स्नेह ही उँडेल दिया हो । आनन्द की एक अनुभूति हो उठती है।

इन्हीं वादियों में, एक ऋषि का आश्रम भी है। आइये, यहाँ देखते हैं क्या हो रहा है। प्रातःकाल की शुभ वेला में, ऋषिवर अपने ब्रह्मचारियों के साथ मिलकर ब्रह्मयज्ञ और देवयज्ञ सम्पन्न कर चुके हैं। अग्निहोत्र की सुरभि चारों ओर फैली हुई है। ब्रह्मचारीगण गऊओं को दुह कर दुग्धपान कर चुके हैं। इतने में ऋषिवर एक ब्रह्मचारी को आदेश देते हैं हे गोपाल! तुम इन गऊओं को अपने निरीक्षण में खोलो, उनकी गिनती करो और वन की ओर प्रस्थान करो। इनको अपनी देख–रेख में ही गति प्रदान करना। ध्यान रखना ये गऊएँ आपस में ही लड़ लहुलुहान न हो जायें। मिल कर रहें, मिल कर घास चरें। ये कहीं दूर घने जंगलों में न निकल जायें। ऐसा न हो कोई शेर इन पर आ झपटे। ऐसा न हो कि कोई गऊ पहाड़ से नीचे गिर जाए और अपनी टाँगें तुड़वा बैठे। सावधान! ये गऊएँ कहीं विषैली घास का सेवन न कर लें। प्रातः से ले कर लौटने तक इनपर कड़ी नज़र रखना। वापिस लौटने के समय इनकी गिनती कर लेना और फिर अपने ही संरक्षण में हाँक कर सुरक्षित आश्रम में वापिस ले आना।

आइये, अब इस चित्रण के आध्यात्मिक पक्ष पर भी चिन्तन–मनन करते हैं। वेद में एक बहुत ही सुन्दर, सारगर्भित मन्त्र आता है:

ओ३म् यत् नियानं, न्ययनं, संज्ञानं यत् प्रयाणम्। आवर्तनं, निवर्तनं, यो गोपा अपि तम् हुवे॥

इस मन्त्र में आत्मा की उपमा गोपाल से की गई है, शरीर की तुलना गऊशाला से और पाँचों ज्ञान–इन्द्रियों, मन और बुद्धि को गऊएँ कह कर पुकारा गया है। वेदमाता के माध्यम से परमात्मा आदेश दे रहे हैं : हे आत्मन्, हे गोपाल! सावधान! ध्यान रहे कि प्रातःकाल जागने के समय से लेकर रात्रिकाल में निद्रा की गोद में जाने तक, तुम्हारी इन्द्रियों के सारे क्रिया–कलाप तुम्हारे ही निरीक्षण में हों। प्रातःकाल का शुभारम्भ प्रभात–वन्दना के मन्त्रों के द्वारा ही हो।

प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे, प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना।

प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिम्, प्रातः सोममुत रूद्रं हुवेम॥

प्रातःकाल की शुभवेला में प्रकाश स्वरूप, ज्ञान स्वरूप सब ऐश्वर्यों के दाता, मित्र, वरुण स्वरूप और सर्वव्यापक प्रभु का हम आह्वान करते हैं। प्रातःकाल स्मरणीय, सबका पालन–पोषण करने वाले, वेद और ब्रह्माण्ड के अधिपति, शान्त स्वरूप और पापियों को रुलाने वाले उस ईश्वर को हम पुकारते हैं। इस प्रकार ब्रह्मयज्ञ से आरम्भ कर, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ और बलिवैश्वदेव यज्ञ हमारी दिनचर्या के अभिन्न अंग हों। हे गोपाल! इन सब इन्द्रियों रूपी गऊओं के सारे कार्य तुम्हारी ही देख–रेख में हों। अपने जीवन रूपी यज्ञ में ये इन्द्रियाँ, ये सप्त होता; सुन्दर, पवित्र, सुगन्धित, पौष्टिक और हितकारी आहुतियाँ ही डालें ताकि सारे वातावरण में सुरभि ही सुरभि फैल जाए। ये तेरी ज्ञान–इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि तेरे वश में हों और उनका आपस में भी ताल–मेल हो। जैसे तुम आदेश दो, बुद्धि उसी के अनुसार अनुसरण करे, मन भी अपनी मनमानी न करे और सदैव शिव–संकल्प वाला हो। **अक्षभिः भद्रं पश्येम;** ध्यान रहे, ये आँखें सदा प्रकृति की सुन्दरता को देखें। ऐसे न हो शारीरिक सुन्दरता का शिकार हो अपने जीवन को गँवा दें। **कर्णेभिः भद्रं शृणुयाम;** ये कान, प्रकृति के मधुर संगीत, वेद–वाणी, ऋषि–मुनि आदि के शुभ–वचनों को ही सुनें न कि अभद्र, अश्लील संगीत, निन्दा–चुगली आदि को। यह वाणी सदैव प्रभु के गुणगान करे। त्वचा भी उसी के स्पर्श का अनुभव करे। ये सभी इन्द्रियाँ, ये गऊएँ कभी विषैली घास का सेवन न करें। सन्त लोग भी यही फरमाते हैं :

खाओ–पियो छको मत, बोलो चालो बको मत, देखो–भालो तको मत।

स्वामी दयानन्द जी की भी यही शिक्षा है:

किसी भी पराई स्त्री को भरपूर दृष्टि से मत देखो।

हे आत्मन्, सायंकाल होते ही इन गऊओं को अपने निरीक्षण में सुरक्षित घर ले आना। यह न हो कि बुरी संगत में पड़ शराब–खाने, जुए–खाने की ओर भटक जाएं। इतना ही नहीं रात्रि को सोने से पूर्व भी शयन–विनय के मन्त्रों–रूपी लोरी द्वारा ही सुलाना। प्रातःकाल से रात्रि तक ही नहीं, जन्म से ले कर मृत्यु तक इन पर नियन्त्रण रखना, न जाने कब मति मारी जाए। पंजाबी भाषा में एक ऐसी ही कहावत है :

दुध फिटदियाँ, बुद्ध फिटदियाँ देर नहीं लगदी।

एक बार चूक हुई नहीं कि जीवन की सारी कमाई मिट्टी में मिल गई। सन्त–महात्मा एक बोध–कथा द्वारा हमारा मार्ग–दर्शन करते हैं :

एक महात्मा नित्य–प्रति प्रातःकाल नदी पर स्नान करने जाते। आश्रम से नदी के मार्ग में एक वैश्या का घर आता था। स्नान करने के पश्चात जब वह आश्रम की ओर लौटते तो कानों में वैश्या का आवाज सुन पढ़ती, "ओ बाबा, क्या तुम्हारी दाढ़ी के बाल ज्यादा सफेद हैं या मेरे कुत्ते के बाल? महात्मा बिना नज़र उठाये, मन्द–मन्द मुस्कराते, आश्रम की ओर बढ़ जाते। यह क्रम बहुत दिनों तक इसी प्रकार से चलता रहा। एक बार महात्मा बीमार पढ़ गये। ईश्वर की न्यायवस्था के अन्तर्गत वह मृत्यु के द्वार पर पहुँच गये। उन्होंने अपने प्रियतम शिष्य को बुलाया और आदेश दिया, "जाओ! वैश्या को बुला लाओ।" शिष्य को बहुत आश्चर्य और दुःख भी हुआ कि ऐसी पवित्र आत्मा को जीवन की अन्तिम घड़ियों में यह क्या सूझ पढ़ा? परन्तु आदेश का पालन करते हुए वह वैश्या को आश्रम में बुला लाया। वैश्या की ओर देख, उस महात्मा ने कहा: **बेटी, तेरे प्रश्न का उत्तर देने का समय आ गया है। अब मैं निश्चय–पूर्वक कह सकता हूँ कि मेरी दाढ़ी के बाल तुम्हारे कुत्ते के बालों से अधिक सफेद हैं।** इतना कहने के बाद ईश्वर का ध्यान करते हुए उन्होंने प्राण त्याग दिये। उस सन्त के इन शब्दों ने, वैश्या के जीवन को एक नई दिशा दे दी।

धन्य हैं हमारे वेदों वाले ऋषि, धन्य है हमारे स्वामी दयानन्द जी का ब्रह्मचर्य, उनकी कठोर तपस्या, उनका ईश्वर के प्रति समर्पण। जीवन में कितने ही प्रलोभन आये, उनके ब्रह्मचर्य को खंडित करने के लिए षड्यन्त्र रचे गये, कितनी ही बाधायें आई किन्तु वह पुण्य आत्मा कभी विचलित नहीं हुई, कभी डगमगाई नहीं। कैसा अद्भुत था उनका अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण।

हे गोपाल! तुम इन ज्ञान–इन्द्रियों रूपी गऊओं को कभी स्वतन्त्र मत छोड़ो, स्वछन्द मत छोड़ो। ऐसा न हो कि ये हरी भरी घास को छोड़ कर विषैली घास खाने लगें। ये चक्षु मानसिक सुन्दरता को भूल कर शारीरिक सुन्दरता के पीछे भागने लगें। ये कान, श्रौत, विद्वानों के सत् वचनों को छोड़ हार–शृंगार रस भरे अश्लील गानों की धुन सुनने के लिए लालायित हो उठें। न जाने कब काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपी व्याघ्र इन पर आ झपटें। मनुष्य की दशा तो बहुत ही दयनीय है क्योंकि यह एक नहीं पाँच–पाँच विषयों का दास है, रूप, रस, गन्ध, शब्द और स्पर्श का। राजा भर्तृहरि वैराग्य–शतक में एक बहुत ही सुन्दर चित्रण करते हैं:

कुरङ्ग–मातङ्ग–पतङ्ग–भृङ्ग, मीना हता पञ्चभिरेव पञ्च।

एकः प्रमादी सः कथं न हन्यात्, यः सेवते पञ्चभिरेव पञ्च॥

वैराग्य शतक

अर्थात् हिरण, हाथी, पतंगा, भंवरा और मछली एक–एक विषय के दास हैं जिस कारण उन्हें मृत्यु का शिकार होना पड़ता है। परन्तु एक प्रमादी मनुष्य तो पाँचों विषयों का यानी रूप, रस, गन्ध, शब्द और स्पर्श का दास है, इसलिए उसकी दशा तो बहुत ही दयनीय है।

जब तक आत्मा रूपी गोपाल शक्तिशाली होता है, आत्मा का आदेश अन्तःकरण और सब ज्ञान–इन्द्रियाँ मानती हैं और व्यक्ति अपने लक्ष्य को नहीं भूलता। परन्तु कभी–कभी पूर्व–जन्मों के संस्कारों के फलस्वरूप, आजकल के विषैले, दूषित वातावरण के कारण, मन और ज्ञान–इन्द्रियाँ अपनी मनमानी करने लगती हैं। आत्मा चाहते हुए भी, कुछ कर नहीं पाता, असहाय सी हो जाता है। ऐसे में एक ही उपाय रह जाता है और वह है प्रभु की शरण। प्रभु के प्रति समर्पित होते हुए आत्मा पुकार उठता है–

ओ३म् पवमानः पुनातु मा, क्रत्वे, दक्षाय, जीवसे।

अथो अरिष्टतातये ॥अथर्व 6.19.2॥

हे पवित्रता के अनुपम, अद्वितीय, दिव्य स्रोत प्रभो! मुझे पवित्र कर दो, निर्मल कर दो जिससे मैं पवित्र हो कर सच्चा क्रतुमान बन सकूँ, यानी मेरी प्रज्ञा और कर्म, मेरी बुद्धि और मेरा कार्य दोनों पवित्र हो जायें। जैसे प्रज्ज्वलित अग्नि में ईंधन डालने से, सारा की सारा ईंधन भस्मासात हो जाता है, मुझमें भी ऐसी ज्ञान–अग्नि प्रज्ज्वलित कर दें कि मेरे सब अशुभ विचार, दुष्कर्म, पाप कर्म उस ज्ञान–अग्नि में जलकर भस्म हो जायें, नष्ट हो जायें। झरने की भांति भीतर से ही ज्ञान फूटने लगे, ध्यान पकने लगे।

हे पवमानः ! हे प्रभो ऐसी कृपा करो कि मैं आपके द्वारा पवित्र हो, मानसिक और आत्मिक बल को प्राप्त कर, अपनी इन्द्रियों का स्वामी बन जाऊँ। आपके आनन्द की अनुभूति कर सकूँ।

541-L,
मॉडल टाउन
प्रधान, आर्य समाज मॉडल टाउन,
यमुना नगर

सत्य व अहिंसावादी दयानन्द

● डॉ. अशोक आर्य (मण्डी डबवाली)

भारतीय व पाश्चात्य महापुरुषों में एक आधारभूत अन्तर रहा है कि भारतीय महापुरुषों ने अपने जीवन की महान् घटनाओं को छुपाने का प्रयास किया है जबकि पश्चिमी लोगों ने आपने छोटे–छोटे कार्यो को भी दूसरों की प्रेरणा का स्रोत बनाने के लिए सदा उसे प्रकाशित किया है। कुछ लोग तो अपने जीवन की छोटी सी घटना से लाभ उठाने के लिए उसे बढ़ा चढ़ा कर बखान करने में भी गौरव समझते हैं। दूसरी ओर जब हम महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन पर दृष्टि डालते हैं तो हम देखते हैं कि महर्षि ने अठारह घण्टे तक की लम्बी समाधि का अभ्यास करके भी अपने लिए कुछ भी प्राप्त करने की कभी इच्छा नहीं की, जो भी चाहा समाज व राज्य की भलाई के लिए, जो कुछ किया इस की त्रुटियों के दूर करने के लिए। यह सब कुछ करते हुए उन्हें अनेक पेट पंथियों व विधर्मियों के कोप का भाजन भी बनना पड़ा, अनेक बार घातक आक्रमण भी उन पर हुए जिन में कुछ तो अत्यन्त घातक थे। महर्षि सच्चे अर्थो के सन्यासी, सत्यवादी व अहिंसा के पुजारी थे, इसलिए न तो उन्होंने किसी आक्रमणकारी को कभी दण्ड दिया और न ही पुलिस में रिपोर्ट की। यदि कभी किसी हमलावर को पकड़ा भी गया तो उन्होंने उसे छुड़ा दिया। यही तो थी स्वामी जी की महानता। आओ यहां स्वामी जी पर हुए ऐसे घातक हमलों में से कुछ हमलों के बारे में जानें।

मैं मनुष्यों को छुड़ाने आया हूँ

अनूप शहर में एक ब्राह्मण ने स्वामी जी को विष युक्त पान भेंट किया। पान मुख में रखते ही स्वामी जी को शरारत का पता चल गया। स्वामी जी ने पान दाता को वहीं छोड़ गंगा पार जा कर वस्ती न्यौली से विष बाहर कर दिया। वहां के तहसीलदार ने पता चलते ही पान देने वाले दुष्ट को हिरासत में ले लिया किन्तु स्वामी जी ने यह कहकर उसे छुड़वा दिया, ''मैं तो मनुष्यों को बांधने नहीं छुड़वाने आया हूँ।'' इसी प्रकार काशी में एक व्यक्ति ने भक्त का रूप धरकर पान भेंट किया। स्वामी जी पान ले खोलकर देखने लगे तो कपटी भाग गया। इसमें भी तेज विष था।

बाबा डूब गया

काशी में स्वामी जी ने अन्य सम्प्रदायों की चर्चा में इस्लाम की भी आलोचना की। जब स्वामी जी गंगा किनारे समाधिस्थ थे तो दो मुसलमानों ने उन्हें पकड़कर गंगा में फेंकना चाहा, किन्तु स्वामी जी ने अपने हाथों को भींचकर गंगा में छलांग लगाकर कुछ गोते खिलाकर उन्हें छोड़ दिया। इस पर भी वह बाहर आकर पत्थर उठा स्वामी जी की प्रतीक्षा करने लगे। स्वामी जी उनकी भावना समझ गए थे तथा गंगा में ही समाधि लगाकर बैठ गए। गुण्डे यह कहते हुए चले गए कि ''बाबा डूब गया।'' यहीं की ही एक अन्य घटनानुसार एक लठैत स्वामी जी का पीछा कर रहा था कि स्वामी जी ने उसकी ओर देख कर हुंकार की। इससे भयभीत होकर वह भाग खड़ा हुआ। इसी प्रकार सोरों में स्वामी जी से पराजित चक्रांकित स्वामी जी को मारने आए और भूल से एक अन्य साधु को खाट सहित उठाकर नदीं में फेंक आए।

ईश्वर सत्य मार्ग दिखाएं

सोरों में स्वामी जी की सभा में एक लठैत आकर बोला तुम ठाकुर का खण्डन करते हो बताओ लट्ठ कहां मारूं। स्वामी जी ने उसे घूरते हुए कहा, यह दोष तो मेरे सिर का है, इसी को मारो। दुष्ट की दुष्टता चली गई तथा रोने लगा। स्वामी जी ने उसे क्षमा करते हुए कहा, ''जाओ ईश्वर तुम्हें सत्य मार्ग प्रदर्शन करे।''

सन्यासी मार पीट नहीं करते

मिर्जापुर सभा में भी दो लठैत आकर गड़बड़ करने लगे। इस पर स्वामी जी की हुंकार सुनकर दोनों बेहोश हो गए व मल निकल गया। स्वामी जी ने उन्हें होश में लाकर कहा ''सन्यासी लोग किसी को मारा पीटा नहीं करते, इसलिए डरो नहीं।'' जाओ कपड़े सम्भाल कर निर्भीकता से चले जाओ। यहीं पर ही एक सेठ के सहयोग से महर्षि को खत्म करने का पुनश्चरण आरम्भ किया। ज्यों कार्य बढ़ता गया, सेठ जी के एक फोड़ा निकल कर तेजी से बढ़ने लगा। अन्त में सेठ जी ने पुनश्चरण बन्द करवाने को कहा कि जब तक दयानन्द का सिर कटेगा उससे पहले मैं ही कट जाऊँगा। यहीं की ही एक अन्य घटना में एक भयानक व्यक्ति सौ साथियों के साथ आकर गड़बड़ करने लगा। स्वामी जी ने कहा कि दरवाजे बन्द कर दो मैं अकेला ही इससे निपट लूंगा। भयभीत वह व्यक्ति सीधा होकर बैठ गया।

जयपुर से भिड़ो जाकर

कर्णवास में स्वामी जी सभा में बोल रहे थे कि बरौली के राव कर्णवास आकर गालियां देते हुए तलवार घुमाने लगे। इस पर स्वामी ने कहा कि यदि शास्त्रार्थ करना है तो अपने गुरु रंगाचार्य को बुला लो, यदि शस्त्रार्थ करना है तो जयपुर जोधपुर से जाकर भिड़ो किन्तु जब वह नहीं माना तो स्वामी जी ने उसकी तलवार छीनकर दो टुकड़े कर दिए।

हम तो सत्य ही कहेंगे

बरेली में स्वामी जी ने व्याख्यान में ईसाई मत की आलोचना की, जिसे सुनकर कलक्टर कुपित हो गए। उन्होंने व्याख्यान बन्द करवाने की धमकी दे डाली। स्वामी जी ने कहा, ''लोग कहते हैं सत्य का प्रकाश न कीजिए क्योंकि कलक्टर कुपित हो जावेगा...चाहे चक्रवर्ती राजा भी अप्रसन्न क्यों न हो जावे हम तो सत्य ही कहेंगे।'' इस दिन रविवार होने के कारण स्काट साहिब गिरजा गए थे, इस पर स्वामी जी भी गिरजा चले गए। स्वामी जी को देखकर स्काट इन्हें मंच पर ले गए, जहां स्वामी जी ने एक घण्टा व्याख्यान दिया।

मेरे रक्षक परमात्मा हैं

फर्रुखाबाद में कुछ गुण्डे स्वामी जी को हानि पहुंचाने आए किन्तु चेहरे का तेज देख भाग गए। जब स्वामी जी को सुरक्षा के लिए अन्दर रहने को कहा गया तो उत्तर मिला, ''मेरी रक्षा तो सर्वत्र परमात्मा ही करते हैं।'' इसी स्थान पर ही स्वामी जी के व्याख्यान में एक शराबी ने स्वामी जी पर जूता फेंका। जब लोग उसे पकड़ने लगे तो स्वामी जी ने उसे यह कहते हुए छुड़ा दिया कि जूता तो हमें लगा ही नहीं, फिर यह भी नशे में है। यहीं की एक अन्य घटना में स्वामी जी को मारने आए एक लठैत ने पूछा, ''तुम मूर्ति को ईश्वर नहीं मानते।'' इस पर स्वामी जी ने उससे ईश्वर का स्वरूप पूछा तो उसने निराकार ही बताया। स्वामी जी ने कहा तो इसमें मूर्ति कहां से आई। इतने से ही वह भी सत्य का पुजारी बन गया। यहीं पर ही एक व्यक्ति भ्रमण करते स्वामी जी को गालियां देने लगा। वह व्यक्ति तंग करने के लिए निवास पर ही जा पहुंचा। स्वामी जी ने हंसते हुए उसका स्वागत किया तो उसका मन बदल गया व भूल के लिए पश्चाताप करने लगा।

मैं तुम्हें लड्डू देता हूं

स्वामी जी अमृतसर में व्याख्यान दे रहे थे कि एक अध्यापक के आदेश से उसके नन्हें छात्रों ने स्वामी जी पर कंकर फेंके तथा पकड़े जाने पर रोते हुए कहा, उन्हें ऐसा करने के लिए अध्यापक ने कहा था तथा लड्डू देने को कहा था। इस पर स्वामी जी ने उन्हें लड्डू देते हुए कहा कि, ''अध्यापक तो सम्भव है न दे सकें, लो मैं तुम्हें दिये देता हूं।।''

हमारा काम वैद्य का है

अमृतसर में ही स्वामी का शास्त्रार्थ तय हुआ किन्तु विरोधी बहुत देर से आए तथा आते ही ईटें आदि फेंकने लगे। पुलिस भय के कारण वह भाग तो गए किन्तु भक्तों का गुस्सा न गया। इस पर स्वामी जी ने कहा, ''हमारा काम वैद्य का हैं।'' यही लोग कभी आप पर पुष्प वर्षा करेंगे। यहीं की ही एक अन्य घटना है। कुछ लोग दुष्टों से स्वामी जी की रक्षार्थ उन के पास सोने लगे। जब स्वामी जी को पता चला कि निहंगों से उनकी रक्षार्थ ये लोग उन के पास सो रहे हैं तो स्वामी जी ने उन्हें रोकते हुए कहा ''हम अकेले ही रहेंगे। जिसकी आज्ञा का मैं पालन कर रहा हूँ वहीं **परमेश्वर मेरा रक्षक है।''**

उपद्रवी भाग गए

वजीराबाद के शास्त्रार्थ में झगड़े को तैयार होकर आए स्वामी जी पर ईटों की भारी वर्षा आरंभ की तो स्वामी जी ने कमरे में जाकर दरवाजा बन्द कर लिया व हंसने लगे किन्तु जब उन्हें पता चला कि सेवक पिट रहें है तो स्वामी जी ने दरवाजा खोलकर जोर से हुंकार की। इससे डर कर दुष्ट भाग गए।

मैं मारा नहीं जाऊँगा

बम्बई में कुछ लोगों ने स्वामी जी की हत्या के लिए लालच देकर आपके सेवक को फांस लिया। स्वामी जी ने भांपकर जब उसे पूछा तो उसने सत्य उगल दिया। इस पर स्वामी जी ने कहा कि, ''जिसे परमेश्वर न मारे उसे मारने के लिए कोई समर्थ नहीं हो सकता। बनारस में मुझे हलाहल विष दिया गया, राव कर्णसिंह ने पान में विष दिलाया, अन्य भी अनेक स्थानों पर विष के विषम प्रयोग किए गए, परन्तु मेरा प्राणान्त नहीं हुआ। स्मरण रखो, अब भी मैं मारा नहीं जाऊँगा।''

तुम मेरा हनन करना चाहते हो

बम्बई में कुछ पन्थाइयों के आग्रह पर स्वामी जी के वध के लिए प्रातः भ्रमण में चार गुण्डे स्वामी जी का पीछा करने लगे। स्वामी जी ने भांप कर कहा, ''तुम मेरा हनन करना चाहते हो।'' इससे वे डर गए व पीछा करना बन्द कर दिया।

ईंटें मेरे लिए पुष्प हैं

सूरत में स्वामी जी के व्याख्यान में एक व्यक्ति ने प्रश्न किये किन्तु स्वामी जी के सामने न टिक पाने पर उसके साथी स्वामी जी पर पत्थर फेंकने लगे। भक्तों के स्वामी जी को व्याख्यान रोकने का आग्रह करने पर स्वामी जी बोले, ''अपने भाइयों द्वारा फेंके पत्थर मेरे लिए पुष्पों की वर्षा हैं।''

ये तो हमारे भाई हैं

भड़ौच में स्वामी जी के व्याख्यान चल रहे थे कि एक दक्षिणी पण्डित स्वामी जी की को इंगित कर अपशब्द बोलने लगा तो लोग भड़क उठे। इस पर स्वामी जी ने कहा, ''ये तो हमारे भाईं हैं। इन्हीं की कल्याण कामना करते हुए दिन बीतते हैं। **आग को आग शान्त नहीं करती।** यहीं की ही एक अन्य घटना में पारसी से ईसाई हुए व्यक्ति ने स्वामी जी की

शेष पृष्ठ 6 पर ☞

ऐतरेय ब्राह्मण में ''ब्रह्म–परिमर''

(अष्टम पंचिका, पंचम् अध्याय का पंचम् खण्ड)

● कृपाल सिंह वर्मा

वैदिक धर्म पूर्ण रूप से एक वैज्ञानिक धर्म है। यहाँ धर्म एवं विज्ञान में कोई अन्तर नहीं है। जो धर्म है वही विज्ञान है, जो विज्ञान है वही धर्म है। इस तथ्य को कुछ यूरोपीय विचारक बहुत पहले जान चुके थे।

लुई जैकालियट नामक विद्वान ने लिखा है–

"Astonishing fact! The Hindu Revelation, Veda, is, of all Revelation & the only one whose ideas are in perfect harmony with modern science."

(The Bible in India, Vol II, by L. Jacoliot)

''आश्चर्यजनक तथ्य है कि एक मात्र हिन्दुओं का ईश्वरीय ज्ञान वेद ही है, जिसके सृष्टि रचना विषयक सिद्धान्त आधुनिक विज्ञान की मान्यताओं के अनुरूप हैं।

एक अमेरिकन विदुषी श्रीमती व्हीलर विललोक्ष लिखती हैं–

''यह भारत उन वेदों की भूमि है जो अद्भुत ग्रन्थ हैं, जिनमें ने केवल पूर्ण जीवन के लिए उपयोगी धार्मिक सिद्धान्तों का समावेश है, अपितु उन सिद्धान्तों का भी प्रतिपादन किया गया है जिन्हें विज्ञान ने सत्य प्रमाणित किया है। बिजली, रेडियम, इलैक्ट्रान, वायुयान आदि सभी कुछ वेदों के दृष्टा ऋषियों को ज्ञात प्रतीत होता है।''

ऐतरेय ब्राह्मण के इस खण्ड में छः प्राकृतिक शक्तियों का वर्णन है। ये शक्तियां किस प्रकार उत्पन्न होती हैं तथा किस प्रकार विलुप्त होती हैं। ये हैं– (1) वायु (2) अग्नि (3) आदित्य (4) चन्द्रमा (5) वृष्टि (6) विद्युत।

(1)वायोः अग्नि जायते, प्रणाद्धि बलान्यथ्य –

मनोअधि जायते।

वायु से अग्नि उत्पन्न होता है क्योंकि प्राण शक्त से मथित होकर ही अग्नि उत्पन्न होता है।

सृष्टि क्रम में आकाश तत्व के उपरान्त सर्वप्रथम उत्पन्न होने वाला तत्व वायु है। वायुकणों की क्रियाशीलता से ही अग्नि तत्व उत्पन्न होता है।

(2)अग्नेर्वा आदित्यो जायते।

अग्नि से आदित्य उत्पन्न होता है।

अग्नि तत्व के कणों की अत्यन्त क्रियाशीलता से आदित्य अर्थात् प्रकाश उत्पन्न होता है।

(3)आदित्याद्वै चन्द्रमा जायते।

आदित्य से चन्द्रमा उत्पन्न होता है। सूर्य के प्रकाश से ही चन्द्रमा प्रकाशित होता है।

(4)चन्द्रमसो वै वृष्टि जायते।

चन्द्रमा से वर्षा होती है। चन्द्रमा अन्तरिक्ष के ताप को कम करता है। शीत उत्पन्न करता है। शीतलता के कारण भारी होकर बादल बरसते हैं।

(5)वृष्टेर्वै विद्युज्जायते।

वर्षा से विद्युत उत्पन्न होती है। जब आकाश बादलों से घिरा होता है तभी विद्युत उत्पन्न होती है।

(6)स एष ब्रह्मणः परिमरः।

इन प्राकृतिक घटनाओं को वैदिक विज्ञान में ब्रह्म–परिमर कहते हैं।

ये प्राकृतिक शक्तियां जिस क्रम से उत्पन्न होती हैं, उसके विपरीत क्रम से विलुप्त हो जाती हैं। जो इस प्रकार है–

(1)अयं वै ब्रह्म यः अयम् पवते, तमेताः पंच देवताः परिमियन्ते–विद्युत वृष्टि चन्द्रमा आदित्य अग्नि।

यह वायु तत्व है जो अन्तरिक्ष में गति करता है। यह वायुतत्व यहां ब्रह्म शब्द से निरूपित किया गया है। ये विद्युत आदि पांच देवता – (1) विद्युत (2) वृष्टि (3) चन्द्रमा (4) आदित्य (5) अग्नि वायु के चारों ओर विलुप्तता को प्राप्त होते हैं।

(2)विद्युद्वै विद्युत्य वृष्टिमनु प्रविशति।

यह जो विद्युत है वह प्रकाश करने के बाद वर्षा में प्रविष्ट हो जाता है अर्थात् अन्तर्हित हो जाता है।

(3)वृष्टिर्वै वृष्टवा चन्द्रम समनु प्रविशति।

वर्षा बरसने के पश्चात् चन्द्रमा में प्रविष्ट हो जाती है। अर्थात् चन्द्रमा से उत्पन्न शीतलता के कारण बादल बरसते हैं तथा आकाश निर्मल होकर पारदर्शी हो जाता है।

(4)चन्द्रमा वा अमावस्यायामादित्यमनु प्रविशति।

अमावस्या के दिन चन्द्रमा आदित्य में प्रविष्ट हो जाता है, वह लुप्त हो जाता है। सूर्य के प्रकाश में स्थित होने के कारण चन्द्रमा दिखायी नहीं देता। अर्थात् सूर्य के प्रकाश में विलुप्त हो जाता है।

(5)आदित्यो व अस्तं यन्नाग्निमनु प्रविशति।

आदित्य अर्थात् प्रकाश समाप्त होकर अग्नि में प्रवेश कर जाता है। यह एक साधारण अनुभव की बात है कि कोयला बहुत अधिक ताप में चमकता है – प्रकाश देता है तथा ताप कम होने पर ये प्रकाश समाप्त हो जाता है लेकिन गर्मी बनी रहती है। वैदिक विज्ञान की भाषा में, प्रकाश अग्नि में प्रवेश कर गया।

(6)अग्निर्वा उद्वान वायुमनुप्रविशति।

अग्नि बुझकर वायु में प्रविष्ट हो जाता है। वह अन्तर्हित हो जाता है। ऊष्मीय स्पर्श अग्नि का गुण है तथा सामान्य ऊष्माहीन स्पर्श वायु का गुण है।

(7)ता वा एता देवता अत एव पुनर्जायन्ते।

वायु के चारों ओर विलुप्त होने वाले ये देवता हैं और ये वायु से ही उत्पन्न होते हैं अर्थात् वायु से अग्नि, अग्नि से आदित्य (प्रकाश), आदित्य से चन्द्रमा, चन्द्रमा से वृष्टि, वृष्टि से विद्युत उत्पन्न होती है। यह एक वैज्ञानिक विश्लेषण है। सूर्य से ताप बढ़ता है, चन्द्रमा से शीतलता, दिन से ताप बढ़ता है तथा रात्रि से शीतलता बढ़ती है।

ऊर्जाओं का रूपान्तरण किस प्रकार होता है?

इस तथ्य का सूक्ष्म निरीक्षण ऐतरेय ब्राह्मण के इस खण्ड में मिलता है।

253 शिवलोक, कंकरखेड़ा, मेरठ
फोन – 9927887788

☞ पृष्ठ 5 का शेष

सत्य व अहिंसावादी...

उपस्थिति में अपने व्याख्यान में स्वामी जी के लिए अपशब्द बोलने आरम्भ किये तो उपस्थिति लोग भड़क उठे। इस पर स्वामी जी ने कहा ''आग में आग डालने से शान्त नहीं होती, वैसे ही द्वेष बुद्धि उसके साथ द्वेष करने से दूर नहीं हो सकती।''

जन्म से सब नीच हैं

पूना प्रवचन के समापन पर स्वामी जी की हाथी पर शोभा यात्रा निकल रही थी। उपद्रवकारियों ने किसी का मुंह काला कर उसे दयानन्द कहते हुए गधे पर बैठा, उसका जुलूस निकालते हुए उसे गालियां देते, उस पर पत्थर आदि फेंक रहे थे। भक्तों ने जब स्वामी जी को बताया तो स्वामी जी ने कहा, ''अच्छा है गालियों से पेट खाली हो लेगा तो अच्छे शब्द बोलेंगे, सच्चे दयानन्द को तो कालिमा नहीं लगी। हां, बनावटी का मुख काला होना ही चाहिए, कल पत्थर पूजते थे आज पत्थर फेंकते हैं सो मेरी बात मान ली, मैं भी तो यही कहता हूँ कि जन्म से सब नीच हैं। जिसने पढ़ा पढ़ाया वह ब्राह्मण हो गया, जो धर्म के लिए युद्ध में लड़ा वह क्षत्रिय हुआ, जिसने व्यापार पशुपालन या कृषि की वह वैश्य हुआ नहीं तो शूद्र। मैंने ब्राह्मण के यहां जन्म लिया था। ब्राह्मण के पुत्र को नीच माना तो मेरे ही सिद्धान्त पर आये, मुझे तो यह बात सुनकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई है।''

एक बार बंगाल में व्याख्यान के मध्य किसी ने स्वामी जी पर सांप फेंक दिया। स्वामी जी ने विषधर को पैर से कुचल दिया। शाहजहांपुर के चान्दापुर में शाक्त लोगों ने स्वामी जी की बलि देवी को देने का प्रयास किया किन्तु स्वामी जी ने पुजारी से तलवार छीन ली व मन्दिर से बाहर आ गए। एक बार रात्रि को कुछ साधु लोगों ने स्वामी जी की कुटिया को आग लगा दी किन्तु स्वामी जी इस में से जीवित निकल आए। जब जयपुर में राज्य ने आप को हानि पहुंचाने की सोची तो एक राजकर्मचारी के आग्रह पर आपने कहा, मेरी चिन्ता मत करो, आप राजकर्मचारी हैं अतः मेरे पास न आया करो ताकि आप की हानि न हो।

जोधपुर राज दरबार में जब स्वामी जी गए तो वहां दरबार में वैश्या उपस्थित थी। स्वामी जी ने इस पर राजा को अच्छी लताड़ लगाई व वापिस लौट कर उसे एक पत्र भी लिखा। इस वैश्या की दरबार में अच्छी साख थी। वह अपमान का बदला लेना चाहती थी। अब उस के साथ अनेक दुष्ट भी मिल गए। उन्होंने रसोइये जगन्नाथ के माध्यम से दूध में हलाहल विष मिलवा कर स्वामी जी का दिलवा दिया। यही विष अन्त में स्वामी जी की शहादत का कारण बना।

स्वामी जी को इस विष देने की घटना को आर्य जगत के ही कुछ विद्वान नकारते हैं। इस संदर्भ में कुछ लोग तो अपने आप को इस क्षेत्र से सम्बन्धित होने का राग अलपाते हुए कहते हैं कि उन्होंने सरकारी रिकार्ड देखा है। वास्तव में उनका यह दावा सत्य से कोसों दूर है। उनमें से किसी ने भी यह सरकारी रिकार्ड नहीं देखा। मैं डीएवी कालेज अबोहर में कार्यरत था। उन दिनों प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी भी वहीं थे। उनके पत्र भारी संख्या में आते थे। जब कभी वह

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

मिथ्या ज्ञान का हटना ही दुःख का निवारण है।

● राज कुकरेजा

दुःख जिसे कोई नहीं चाहता है, पर दुःखी हैं और सुख जिसे सब चाहते हैं पर सब पूर्ण रूप से सुखी नहीं हैं। जो इन्द्रियों के अनुकूल वो सुख और जो इन्द्रियों के प्रतिकूल वो दुःख। ऋषि पतंजलि जी ने योग दर्शन में एक सूत्र दिया है– हेय **हेयहेतु, हान हानोपाय**। अर्थात् दुःख, दुःख का कारण, सुख, सुख का उपाय। वे कार्य–कारण के सम्बन्ध को मानते हैं कि कारण को हटा देने से कार्य स्वयं हट जाता है। सभी दुःख से छूटना चाहते हैं परन्तु दुःख के कारण को नहीं पकड़ पाते, सोचते हैं कि सुख का उपाय अधिक से अधिक धन की तिजोरी भर लेने से तथा जिन साधनों से व भोग सामग्री से शारीरिक सुख मिले उसका अधिक से अधिक मात्रा में संग्रह कर लेने से वे पूर्णतः सुखी हो जायेंगे। यह उन की मिथ्या धारणा है। प्रायः देखा जाता है कि संसार के सारे भोग–पदार्थ प्राप्त कर भी मानव अशांत रहता है। ऋषि पतंजलि जी का मानना है कि विवेकी जन संसार के सभी विषय–भोगों में चार प्रकार का दुःख मान कर इन्हें छोड़ देते हैं। इस सूत्र को समझा ऋषि दयानन्द सरस्वती जी ने जिन का जन्म हुआ एक सम्पन्न परिवार में, घर में किसी भी प्रकार का अभाव न था, पर उन्हें सच्चे सुख की तलाश थी जिस कारण घर परिवार का त्याग कर सच्चे सुख की खोज में चल पड़े। महात्मा बुद्ध बचपन में जिन का नाम सिद्धार्थ था, जन्म राज महल में हुआ, गृहस्थी बने, एक बालक को जन्म दिया परंतु एक रात को गृह त्याग दिया, और सच्चे सुख की खोज में निकल पड़े ऋषि का मानना है कि संसार में–**कुत्रऽपि कोऽपि सुखी न भवति**। गुरु नानक देव जी ने इसे सरल भाषा में कहा कि "**नानक दुखिया सब संसार**"।

सांख्य दर्शन के रचयिता ऋषि कपिल संसार के समस्त दुःखों का वर्गीकरण तीन प्रकार के दुःखों में करते हैं एक **आध्यात्मिक** जो आत्मा, शरीर में अविद्या, राग, द्वेष, मूर्खता और ज्वर पीड़ा आदि से होता है। दूसरा **आधिभौतिक** जो शत्रु, व्याघ्र और सर्प आदि से प्राप्त होता है। तीसरा **आधिदैविक** अर्थात् जो अति वृष्टि, अनावृष्टि, अति शीत, अति उष्णता, मन और इन्द्रियों की अशांति से होता है। अधिकांश प्राणी **आध्यात्मिक** दुःख जो शरीर और आत्मा सम्बन्धी है उस से पीड़ित रहते हैं। **अविद्या** ही इस का मूल कारण है। दर्पण में शरीर को देखते हैं, स्वयं को केवल शरीर ही मान लेते हैं। शरीर का पालन–पोषण और इस के सजाने–संवारने को ही अपना धर्म मान लेते हैं और आत्मा जो शरीर का स्वामी है उस की उपेक्षा कर देते हैं। जब तक आत्मा को उस का भोजन जो ईश्वरीय आनन्द है नहीं दिया जाएगा, जीवन में शान्ति का स्वप्न, स्वप्न ही रहेगा। हम ने आत्मा को शरीर–रूपी कमरे में बंद कर दिया है। दिन–रात शरीर को सजाने में लगे रहते हैं। आत्मा की भूख मिटाने की कभी न तो चिंता की, न परवाह की, परिणाम स्वरूप जीवन में अशांति का साम्राज्य छाया हुआ है। अविद्या के ही कारण जड़ मन को चेतन समझने लगते हैं और समझते हैं कि मन स्वयं ही विचारों को उठाता रहता है। अज्ञानता के कारण भूल जाते हैं कि आत्मा ही मन का स्वामी है, आत्मा की इच्छा के बिना मन कुछ भी करने में असमर्थ है। मन में अनावश्यक व हानिकारक विचारों को उठा कर हम स्वयं ही अपनी हानि कर रहे होते हैं। मन की शान्ति के लिए मन में सकारात्मक विचारों को हमें अधिक महत्त्व देना चाहिए। मन में नकारात्मक विचार मन को अशांत बनाते हैं। नकारात्मक विचारों से ही पहले हम स्वयं को दुःखी करते हैं। इसलिए अति आवश्यक है कि मन को शिव संकल्प वाला बनाएं। मन एक ऐसी नदी है जिसका प्रवाह निरंतर बह रहा है और उसे मनुष्य अपनी बुद्धि का उचित प्रयोग करते हुए कल्याण की ओर बहा सकता है, यदि बुद्धि प्रयोग समुचित न करें तो पाप की ओर भी बहा सकता है।

सारा विश्व अज्ञान में जीने के कारण दुःख के सागर में गोते लगा रहा है। अपेक्षाओं के कारण भी हम दुःखी हो रहे हैं। मिथ्या अभिमान के कारण धारणा बना लेते हैं कि जो चाहेंगे वे इच्छाएं पूर्ण हो जायेंगी। किन्तु ऐसे शत–प्रतिशत कभी किसी की इच्छा पूर्ण नहीं होती और भौतिक स्तर पर सब कामनाओं की पूर्ति हो ही नहीं सकती। हम चाहते हैं कि सभी लोग व सभी परिस्थितियां हमारे ही अनुकूल हों, जो असम्भव है, क्योंकि कर्म करने में सब स्वतंत्र हैं। कर्त्ता तो कहते ही उसे हैं जो कर्तुम, अकर्तुम अन्यथा कर्तुम में स्वतंत्र हो अर्थात् चाहे तो करे, न चाहे तो न करे या उल्टा करे। सब के अपने विभिन्न संस्कार और योग्यताएं होती हैं। प्रत्येक में जन्म–जन्मान्तर के संस्कार अलग–अलग हैं। ईश्वर ने कर्म का अधिकार तो सब को दिया है। अपने कर्तव्य का पालन करते नहीं हैं, दूसरों के कर्तव्य पर अपना अधिकार समझने लगते हैं। परिस्थितियाँ भी सब के लिए एक जैसी कभी नहीं हो सकतीं। कुम्हार को धूप चाहिए तो किसान को वर्षा बाह्य जड़ व चेतन साधन हमारी खुशी का स्रोत हैं, ये भी एक बहुत बड़ी मिथ्या धारणा है। बाह्य (भौतिक साधन) चेतन (सन्तान व परिवार) सब अनित्य हैं, जो स्वयं अनित्य, परिवर्तनशील हैं वे हमें क्या सुख देंगे। बड़ी विचित्र बात लगती है कि सब का रिमोट अपने हाथ में रखना चाहते हैं तो अपना रिमोट दूसरों के हाथों क्यों रख कर दुःखी हो रहे होते हैं।

आज मनुष्य स्वार्थी व संकीर्ण बनता जा रहा है। सब सुख सामग्री अपने पास ही बटोर कर रखने का स्वभाव बनाता जा रहा है। विडम्बना तो यह है कि अपने दुःख से इतना दुःखी नहीं है, जितना दुःखी दूसरों के सुख से है। मनुष्य अपने अभाव से इतना दुःखी नहीं है, जितना दूसरे के प्रभाव से दुःखी होता है। अभाव उसे इतना नहीं अखरता जितना ये अखरता है कि दूसरों के पास क्यों है। अपने भीतर जलन की ज्वाला उत्पन्न कर के स्वयं ही जलता रहता है। दूसरों से जलन और दूसरों से व्यर्थ की आशाएं यदि ये दो चीजें हम छोड़ दें तो हम इस बहुमूल्य मानव जीवन को बहुत आनन्द से जी सकते हैं, अन्यथा व्यर्थ ही इसे खो देंगे। इसे इस दृष्टांत से भली प्रकार समझ सकते हैं– रामलाल और बाबू लाल दो वरिष्ठ नागरिक हैं। दोनों घनिष्ठ मित्र हैं, दोनों परस्पर सुख–दुःख के साथी हैं। रामलाल का अपने घर में कोई मान–सम्मान नही हैं, उपेक्षित सा जीवन या यूं कहे वो अपने घर में कड़वे घूंट पी कर जीवन जी रहा है। वह सोचता है कि उस का मित्र बाबू लाल भी उस के ही समान उपेक्षित जीवन जी रहा होगा। लेकिन एक दिन जब उस का भ्रम टूटा, उसे पता चला कि मित्र तो बड़े मजे में बहुत ही सम्मान पूर्वक जिन्दगी गुज़ार रहा है तो अपने मित्र से कन्नी काटने लगा। उसकी छाती पर मानो सांप लोटने लगा हो। मित्र के साथ उस का व्यवहार ही एकदम बदल गया। बाबूलाल समझा गया कि उस का मित्र उस की सम्मानित जिन्दगी को नहीं पचा पा रहा है। बाबूलाल ने रामलाल को कहा–देखो मित्र! ऐसा नहीं है जैसा तुम समझ रहे हो। ये सब मेरे परिवार वाले तुम्हारे सामने नाटक कर रहे होते हैं। अब राम लाल को संतुष्टि हो गई कि केवल वो ही दुःखी नहीं है, उस का मित्र भी उसी के समान दुःखी है। ऋषि पतंजलि सुंदर सा दृष्टिकोण देते हैं कि सुखी लोगों से मैत्री, दुखी पर करुणा, पुण्य आत्मा को देख कर प्रसन्नता और अपुण्य आत्मा की उपेक्षा कर देने से चित्त प्रसन्न रहता है। प्रसन्न चित्त से एकाग्रता होती है। एकाग्र चित्त से ध्यान लगता है और ईश्वर की स्तुति–प्रार्थना–उपासना में भी मन लगता है। सब दोष, दुःख छूट कर परमेश्वर के गुण–कर्म–स्वभाव के सदृश जीवात्मा के गुण–कर्म–स्वभाव पवित्र हो जाते हैं। आत्मा का बल इतना बढ़ता है कि वह पर्वत के समान दुःख प्राप्त होने पर भी घबराता नहीं और सब को सहन करने का सामर्थ्य उसे ईश्वर प्रदान करता है। यह तो हो नहीं सकता कि एकाग्र मन से ईश्वर की स्तुति–प्रार्थना–उपासना करें और ईश्वर के आनन्द से वंचित रहें। यदि वंचित हैं तो देखें कि भूल कहाँ हो रही है, इस कारण क्या है? शीत से आतुर पुरुष का अग्नि के पास जाने से शीत निवृत्त हो जाता है। अग्नि से शीत निवृत्त नहीं हो रहा तो इस का कारण है कि या तो अग्नि मंद है या फिर अग्नि से दूर बैठे हैं। इसी प्रकार ईश्वर ध्यान में ईश्वर के आनन्द की उपलब्धि नहीं हो रही तो कारण को जानें कारण है अविद्या जिस कारण ईश्वर के स्वरूप को जाने बिना उपासना कर रहे होते हैं। यथार्थ ज्ञान से ईश्वर के सच्चे स्वरूप को जान कर जब अपने हृदय में ईश्वर के सच्चे स्वरूप की उपासना करते हैं, तब ईश्वर हृदय में अच्छी तरह प्रकाशित हो कर अविद्या अन्धकार को नष्ट कर सुखी करते हैं।

मिथ्या ज्ञान (अविद्या) दुःख का मूल कारण है तो **यथार्थ ज्ञान** ही सुख का मूल कारण है। **यथार्थ ज्ञान** अर्थात् जो पदार्थ जैसा है उस को वैसा ही जानना। जड़ को जड़, चेतन को चेतन, सुख में सुख और दुःख में दुःख को समझना। यथार्थ ज्ञान से ईश्वर, जीव, प्रकृति को अलग–अलग जान लेना ही दुःख नाश करने का उपाय है। योग के आठ अंगों को व्यवहार में लाने से यथार्थ ज्ञान का विकास होता है और अविद्या आदि दोषों का नाश होता जाता है। **मिथ्या ज्ञान का हटना ही दुःख का निवारण है।**

ईश्वर से प्रार्थना है:

"दूर अज्ञान के हों अँधेरे, तू हमें ज्ञान की रोशनी दे।
हर बुराई से बचते रहें हम, जितनी भी दे भली जिंदगी दे।"

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग भवेत।।

786/8 अर्बन एस्टेट,
करनाल–132001 हरियाणा

शास्त्रार्थ महारथी–भारती देवी

● पं. जगदीश चन्द्र ''वसु''

ऋषिवर दयानन्द के आगमन से पूर्व महिला समाज को हेय दृष्टि से देखा जाता था, मध्यकालीन समस्त आचार्यों ने स्त्री–जाति को वेद का पठन–पाठन तथा यज्ञादि शुभ कार्यों से वंचित रखा "स्त्री शूद्रौना धीयतामिति श्रुते" का नारा देकर अपनी अज्ञानता का परिचय दिया, समस्त मत–मतान्तरों के आचार्यो ने भर पेट निन्दा की, किसी ने इनको निर्जीव, अचेतन एवं भोग्य पदार्थ की संज्ञा दी।

महर्षि दयानन्द शिक्षा पूरी कर गुरु दण्डी विरजानन्द सरस्वती से आशीर्वाद प्राप्त कर वैदिक–धर्म के प्रचार–प्रसार हेतु तथा समाज में व्याप्त कुरीतियों, अन्धविश्वास, पाखण्ड, अज्ञान, चमत्कार एवं धर्म के नाम पर होने वाले अत्याचारों का निवारण करने के लिये कूद पड़े। सर्वप्रथम 7 अप्रैल सन् 1875 में मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की, आर्य समाज के माध्यम से इस आर्यावर्त देश में जगह–जगह सनातन वैदिक धर्म का प्रचार–प्रसार तथा स्त्री जाति के वेदाध्ययन का मार्ग प्रशस्त किया, महिलाओं–शूद्रों के साथ सभी प्रकार के भेदभावों को समाप्त किया और उन्हें प्रत्येक क्षेत्र में ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्यों के समान सभी अधिकार दिलाये।

आर्य समाज ने इस दिशा में बहुत पहले ही अदभुत कदम उठाकर नारी के मन में चेतना, जागृति और साहस की लहर उत्पन्न करने का प्रयत्न किया। नारी अधिकारों एवं सुधारों के प्रति उसके सनातन [पुरातन] योगदान और दृष्टिकोण दोनों का स्मरण होना स्वाभाविक है। नारियों को जब परदें और घर की चार दीवारी से आगे बढ़ने तक समाज ने प्रतिबन्ध लगा रक्खे थे, उस समय आर्य समाज ने उनके विरुद्ध विद्वान् प्रचारकों एवं आर्य नेताओं ने आन्दोलन छेड़ा था। कन्याओं के विद्यालय आरम्भ में जब आर्य समाज ने खोले तो इन सनातनी हिन्दुओं [आर्यों ने] ही उसका यह कहकर विरोध किया कि लड़कियों को पढ़ा–लिखा कर मेम थोड़े ही बनाना है।

आर्य समाज ने समाज सुधार की श्रृंखला में भी नारियों की समस्या को प्राथमिकता दी और समाज में व्याप्त पारिवारिक कुरीतियों को समूल उखाड़ फेंकने के लिये कमर कस ली। हिन्दू–महिलाओं की दयनीय दशा को देख कर रोना आता था, ईसाइयों ने तो सिद्धान्त रूप में ही नारियों में जीवात्मा ही नहीं मानी थी, उसे केवल–अचेतन, निर्जीव एवं भोग्य समाग्री ही समझ बैठे हैं। मुसलमान उसे अपनी खेती मात्र ही समझता है। जैनियों ने भी इसे अपवर्ग मोक्ष से वंचित किया हुआ है। पर हिन्दू समाज [आर्य समाज] तों उसे प्रत्यक्ष व्यवहार में परिणत कर रहा था। परन्तु महर्षि देव दयानन्द तथा उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज ने हिन्दू समाज को एक नया क्रान्तिकारी दृष्टिकोण दिया जो आगे चलकर परिवर्तन के मोर्चे को सुदृढ़ करने में परमसहायक सिद्ध हुआ। महर्षि दयानन्द 19वीं शताब्दी के उन महापुरुषों में थे जिन्होंने एक मन्दिर के चबूतरे पर खेलती हुई छः वर्ष की बालिका को देखकर अपना मस्तक झुका दिया, देखने वालो ने जब यह प्रश्न किया कि– स्वामी जी? वैसे तो आप मूर्ति पूजा का खण्डन करते हैं किन्तु मूर्ति का यह प्रभाव है कि आपका मस्तक अपने आप झुक गया। उन्होंने उत्तर दिया कि मैंने अपना माथा मूर्ति को नहीं झुकाया, अपितु इस छोटी सी बालिका को झुकाया है। मैं इसका अभिवादन करके मातृ–शक्ति का अभिवादन कर रहा हूँ। महर्षि में मातृ–शक्ति के प्रति कितनी अगाध श्रद्धा, विनम्रता एवं आदर सम्मान की भावना थी।

नारियों की शिक्षा के क्षेत्र में भी आर्य समाज ने परिवर्तन किये। यजुर्वेद में "यथेमां वाचं कल्याणीं मावदानि जनेभ्यः" के आधार पर उन्होंने यह प्रतिपादित किया कि – सृष्टि के आरम्भ में परमपिता परमात्मा ने मानव मात्र के लिये चारो ऋषियों के अन्तःकरण में चारों वेदों को प्रकाशित किया। परमेश्वर ने यह ज्ञान सबके लिये दिया। अतः यह अनिवार्य हो जाता है कि लडकों–लड़कियों को विद्वान व विदुषी बनाने के लिये तन मन धन से प्रयत्न किया जाये जिससे स्त्रियां भी वेदाध्ययन करके नाना प्रकार की विद्यायें सीख कर शारीरिक, मानसिक व आत्मोन्नति कर सुभद्रा, देवकी, सीता, गार्गी, मैत्रेयी सुलभा, भारती देवी आदि विदुषियों की भांति विदुषी बन सकें, और तेजस्वी, ओजस्वी व्यक्तित्व को विकसित कर सकें।

मध्यकालीन आचार्यों द्वारा स्त्रियों के पढ़ने–पढ़ाने तथा यज्ञादि सर्वश्रेष्ठ कर्मों का निषेध–आर्य समाज ने अपने जन्मकाल से ही मूर्खता को स्वार्थपरता, अज्ञानता और निर्बुद्धि का परिचायक माना है। महर्षि दयानन्द के अनुसार, विद्वान–पति, और अनपढ एवं असंस्कृत पत्नी गृहस्थी की गाडी को सुचारु रूप से कदापि नहीं खींच सकते। शिक्षित नारी ही अपने अधिकारों के प्रति मूलरूप से जागरूक रह सकती है। इसीलिये महर्षि ने पुरुषों के समान स्त्रियों को भी व्याकरण, धर्मशास्त्र, आयुर्वेद, गणित, वेद–वेदांग, शिल आदि सभी विद्याओं [शिक्षाओं] के लिये योग्य ठहराया है।

मध्यकालीन इतिहास को आद्योपान्त पढ़ने से ज्ञात होता है कि उस समय भी आर्य विदुषियां नारी कभी गौरव, आदर, श्रद्धा, स्नेह और ममता की साकार प्रतिमा थी। वेद ने कहा है कि "शुद्धां पूतां योषितां यज्ञ इमां" अर्थात ये महिलायें शुद्ध हैं, पवित्र हैं, यज्ञादि कर्मकाण्ड करने–कराने का अधिकार रखती हैं। स्मृतिकार मनु ने भी ठीक ही कहा है कि – यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।

यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते, सर्वास्तत्रा फलाक्रिया॥

अर्थात् – जहां नारियों का आदर सत्कार सम्मान होता है वहां श्रेष्ठ, उत्तम परोपकारी देवता निवास करते हैं। और जहां नारियों का यथोचित सम्मान आदर–सत्कार नहीं होता वहां समस्त कार्य फल निष्फल हो जाते हैं।

परन्तु आज वही नारी दिव्य गुणों को विस्मृत कर, सादा जीवन, ऊँचे विचारों को विस्मृत कर, विलासिता, फैशन, सजावट, स्वेच्छाचार और आराम की कामना में पड़कर खिलवाड़ का साधन बनती जा रही हैं। कोई समय था पुरूष उसकी अराधना करता था और अब उसे खिलौना समझ मनोरंजन का साधन मात्र समझता हैं। यह बहाव और परिवर्तन विश्व में पतन, अन्धकार और अशान्ति का कारण है।

नारी कैसे अपने पूर्व पद को प्राप्त कर मानव की निर्मात्री, संस्कारी, प्रेरणा और जीवन शक्ति बने? किसी कवि ने उसके उत्तर में ठीक ही लिखा है:–

पावन जीवनियों को पढ़ कर,
पा सकते हैं हम उद्धार।
और उन्हीं के चरण चिन्हों पर,
कर सकते हैं बेड़ा पार ॥

तो आइये आज हम 8वीं शताब्दी की एक वैदिक पण्डिता, आर्य विदुषी, "भारती देवी" के जीवन का अवलोकन करें :–

जगद्गुरु शंकराचार्य के प्रादुर्भाव के समय भारतीय महिला इतिहास को उज्जवल करने वाली, अलौकिक मेधा बुद्धि वाली, और प्रतिभा सम्पन्न "भारती देवी" नामक एक विदुषी पण्डिता और मनस्विनी युवती हुई हैं। इतिहासकारों के मत से आद्य जगदगुरु शंकराचार्य का काल 8वीं शताब्दि में है। वही समय इस भारती देवी का होना युक्ति–संगत हो सकता है। क्योंकि आचार्य शंकर का "भारती देवी" के साथ शास्त्रार्थ करना जगत प्रसिद्ध है।

पटना के पास शोण नदी के तट पर किसी छोटे से गांव में एक विष्णु मित्र नामक ब्राह्मण रहते थे। इन्हीं के यहां "भारती" का जन्म हुआ था। बचपन में इनका नाम "सरस्वती" था। सरस्वती के ब्राह्य शारीरिक चिन्हों को देखकर सामुद्रिक शास्त्रज्ञों ने कहा कि साक्षात भगवती–सरस्वती ने ही इस देह में प्रवेश किया है। सरस्वती की प्रखर प्रतिभा को देखकर विष्णु मित्र ब्राह्मण ने पढ़ाना–लिखाना शुरू किया। एक योग्य गुरु की व्यवस्था की गई। सरस्वती ने अपने पूर्व जन्म की अतीत स्मृति की तरह से थोड़े ही दिनों में वेद–वेदांग, इतिहास और गणित एवं अन्य कई धर्म–शास्त्रों को पढ़ डाला। "शंकर दिग्विजय" में लिखा है कि "ऐसा कोई शास्त्र नहीं जिसका सरस्वती ने स्वाध्याय न किया हो।" थोड़े ही समय में सरस्वती के रूप और गुणों की चर्चा समस्त देश में फैल गई। रूप और गुणों में समानता देखकर लोग उसे उभय भारती कहने लगे, और इस प्रकार "सरस्वती, भारती" के नाम से प्रसिद्ध हुई।

उस समय भारत मे बौद्ध–मत के अनुयाइयों का बोल–बाला था। इनकी वैदिक–धर्म के प्रति महती अश्रद्धा सर्वसाधारण लोगों के हृदय में स्थापना हो रही थी। इस समय वैदिक–शास्त्रों के अद्वितीय ज्ञाता और शास्त्रार्थ में प्रचण्ड तर्क और युक्तियों तथा प्रमाणों का समावेश कर प्रतिवादियो को परास्त कर देने वाले "विश्व रूप" नामक एक ब्राह्मण हुए, प्रखर प्रतिभा और अपूर्व विद्वता को देखकर लोगों ने उनका नाम "मण्डन मिश्र" रखा "मण्डन मिश्र" जी जैसे प्रतिभाशाली विद्वान् थे, उन्हीं के साथ लेख नायिका "भारती" का विवाह सम्पन्न हुआ।

एक दिन शंकराचार्य जी दिग्विजय के प्रसंग से इनके यहां माहिष्यति नगरी में पधारे और मण्डन मिश्र जी से शास्त्रार्थ की भिक्षा मांगी। दोनों शास्त्रार्थ–महारथियों को मध्यस्थता के लिये एक प्रामाणिक, निष्पक्ष विद्वान की आवश्यकता पड़ी। कोई दिग्गज–विद्वान् दृष्टिगोचर न हुआ। वेद–शास्त्रज्ञ "भारती देवी" [मण्डन मिश्र की पत्नी] को ही मध्यस्थता के लिये योग्य समझा गया। भारती देवी ने उनका मध्यस्थ पद स्वीकार किया, 16 दिनों तक "द्वैतवाद और अद्वैतवाद" पर शास्त्रार्थ होता रहा। अन्तिम शास्त्रार्थ के दिन भारती देवी को किसी गृह कार्य वश जाना पड़ा। जाते समय उसने आचार्य शंकर और मिश्र जी के गले में मालायें डाल दीं और कहा कि मेरा प्रतिनिधित्व ये मालायें करेगी। जनता को यह सुनकर आश्चर्य हुआ कि मालायें कैसे प्रतिनिधित्व करेगीं? उनको विश्वास नहीं हुआ। परन्तु भारती देवी यह कहकर गम्भीर मुद्रा से चली गई। शास्त्रार्थ चलता रहा। अपना कार्म समाप्त कर भारती देवी लौट आई। दोनों के मुख मण्डल का परीक्षण किया। खेद और लज्जा के साथ उसने मिश्र जी [अपने पति] की पराजय की घोषणा कर दी। उपस्थित लोग पंडिता की

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

वासुदेव बलवन्त फड़के

● मोहन लाल मगो

प्रायः वासुदेव फड़के को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सशस्त्र संघर्ष का पिता कहा जाता है। फड़के का कहना था कि उनकी बीमारी का एकमात्र इलाज स्वराज्य है। 1857 में जो प्रयास भारतीय सैनिकों ने किया, भारतीय अस्मिता को बचाने के लिए तीन युद्धों को लड़कर जो प्रयास मराठों ने किया और 1840 में सिख बन्धुओं ने किया, वह असफल रहा। उसी का अनुसरण वासुदेव बलवन्त फड़के ने शक्तिशाली ब्रिटिश शासन की चूलें हिलाने के लिए किया और भारत से ब्रिटिश शासन को हटाने के लिए सशस्त्र विद्रोह किया। वासुदेव को बचपन से ही कुश्ती और घुड़सवारी का बहुत शौक था। उन्होंने पुणे में 15 साल तक मिलिट्री के लेखा विभाग में एक क्लर्क की नौकरी की। लाहूजी ने उनको स्वतन्त्रता संग्राम की मुख्यधारा में लाने का महत्व समझाया। लाहूजी जो स्वयं भी एक दलित वर्ग के थे उन्होंने वासुदेव को दलितों को स्वतन्त्रता का महत्व समझाया। वासुदेव ने महादेव गोविन्द रानाडे के अनेक भाषण सुने जिनमें मुख्यतः बताया जाता था कि ब्रिटिश राज्य में किस प्रकार भारतीय अर्थव्यवस्था को तहस नहस किया जा रहा है जिसकी वजह से भारतीय समाज को अनेक दुःख सहने पड़ रहे हैं। वासुदेव फड़के ने *एक्यवर्द्धनी सभा* के नाम से एक संस्था की स्थापना की। वासुदेव जब नौकरी करते थे तो उनके अवकाश की स्वीकृति में देर होने के कारण वे अपनी मरती हुई मां के अन्तिम दर्शन नहीं कर पाये। संभवतः यह घटना वासुदेव को अन्दर तक कचोट गई और उनके जीवन का टर्निंग प्वाइन्ट साबित हुई। 1860 में फड़के, लक्ष्मण नरहरि इन्द्रपुरकर और बामन प्रभाकर भावे ने 'पूर्ण नेटिव इंस्टि्टयूशन' की स्थापना की जो बाद में 'महाराष्ट्र ऐजूकेशन सोसाईटी' के नाम से जाना जाने लगा। 1875 में बड़ौदा के शासक गायकवाड़ को अंग्रेजों ने त्रस्त किया तो फड़के ने इसके विरुद्ध आवाज उठाई। वासुदेव फड़के ने विशष रूप से रामोशी, कोली, भील और धंगार जैसी दलित व जनजातियों को स्वतन्त्रता के लिए संगठित किया। उन्होंने तीन सौ आदमियों का संगठन बनाया जिसका उद्देश्य भारत को ब्रिटिश राज्य से छुटकारा दिलाना था। वस्तुतः वासुदेव इस निमित्त एक सेना बनाना चाहते थे। परन्तु धन की कमी की वजह से उन्होंने सरकारी खजाने को लूटने की योजना बनाई। इस क्रम में पुणे जिले के सिरपूर तालुकान्तर्गत धामरी गांव पर उन्होंने पहला हमला बोला। ब्रिटिश सरकार द्वारा जो आयकर एकत्रित किया जाता था वह वहां के एक स्थानीय व्यापारी बालचन्द फौजमल सांखला के यहां रखा जाता था। वासुदेव ने इनके घर पर धावा बोला और सूखे की चपेट में आये ग्रामीणों की सहायता के लिए उस धन को लूट लिया। इस लूट में उन्होंने करीब चार सौ रुपये लूटे। परन्तु इस वारदात से उनके ऊपर डकैत होने का ठप्पा लग गया। इस घटना के बाद अपने को बचाने के लिए वासुदेव गांव–गांव बचते–फिरते रहे और उनके दलित साथियों का उसमें सहयोग रहा। नानाघूम ने उनको स्थानीय जंगल में शरण दी। यहां वे सुरक्षित रहे। ब्रिटिश खजाने को लूटते रहे और सूखाग्रस्त किसानों की सहायता करते रहे। 10 मई 1879 की रात को उन्होंने पलासपी और चिखाली पर धावा बोला और 1.50 लाख रुपये लूटा। लौटते में मेजर डेनियल ने उनके एक साथी नायक को गाली मार दी। इससे वासुदेव के मिशन को बहुत धक्का लगा और वे श्रीशैला मल्लिकार्जन के मन्दिर में चले गये। इसके बाद वासुदेव ने करीब पांच सौ रोहिल्ला साथियों को तैयार किया। इस बीच ब्रिटिश सरकार ने इन्हें पकड़वाने के लिए पुरस्कार की घोषणा कर दी। इसके प्रत्युत्तर में इन्होंने बॉम्बे के गर्वनर को पकड़ने के लिए पुरस्कार की घोषणा कर दी। अधिक समर्थन प्राप्त करने के लिए ये निजाम के क्षेत्र में भी गये जहां बीजापुर में 20 जुलाई 1879 को इनको पकड़ लिया गया। इनके खिलाफ गवाही में इनकी अपनी डायरी व आत्मकथा सबूत के रूप में प्रस्तुत की गयी। सजा के तौर पर इनको उम्रभर के लिए अण्डमान भेज दिया गया। 17 फरवरी 1883 में अदन की जेल में इनकी मृत्यु हो गयी। इस प्रकार वासुदेव बलवन्त फड़के पूरी जिन्दगी ब्रिटिश राज के विरुद्ध संघर्ष करते रहे यद्यपि इनको सीमित सफलता ही मिल पायी परन्तु अनके दृढ़ निश्चय, संगठन व परोपकार की भावना व स्वतंत्रता प्राप्ति की लालसा इतिहास के पन्नों के लिए दर्ज है। भारतीय डाक व तार विभाग ने इनके सम्मान में 21–02–1984 को एक डाक टिकट भी निकाला।

पी.–65, पाण्डव नगर,
दिल्ली–110091

क्या दिल्ली के जामिया मिल्लिया परिसर में मिनी–पाकिस्तान पनप रहा है

● हरिकृष्ण निगम

सारी दुनियाँ में केवल भारतीय मुस्लिम ही फासीवादी इस्लाम से टक्कर ले सकते हैं।'

– कनाडा के लोकप्रिय अंग्रेजी लेखक तारिक फतेह

'दुनियां भर में यदि कोई संगठित जनसमूह फासीवादी – इस्लाम का विनाश कर सकता है तो वे भारतीय मुस्लिम ही हो सकते हैं, '' यह दो टूक वक्तव्य हाल में प्रसिद्ध पाकिस्तानी मूल के कनाडा के लेखक व विचारक तारिक फतेह ने हाल ही में दिल्ली में दिया था।

तारिक फतेह कनाडा के एक प्रसिद्ध अंग्रेजी लेखक और ब्राडकास्टर है जो अप्रैल 2013 को नई दिल्ली आए थे। वे अपने कड़वे सच व राजनीतिक विश्लेषण से धर्मान्ध मुस्लिमों को राजनीतिक सच का सामना कराने व अपनी विद्वतापूर्ण तार्किक प्रस्तुति के लिए विख्यात हैं।

जब वे कहते हैं कि दुनियाँ भर में अकेले भारतीय मुसलमानों को यह ऐतिहासिक अवसर, वातावरण या सौभाग्य मिला है कि वे आज एकजुट होकर व्याप्त इस्लामी धर्मांधता की चुनौती– इस्लामोफासिज़्म– से टक्कर ले सकते हैं। पर जैसा हमारे देश में बहुधा होता है कुछ कट्टरवादियों ने उन्हें विवादों के घेरे में डालने की कोशिश की।

तारिक फतेह की टिप्पणियों से उत्तेजित धर्मान्धों ने आयोजकों पर इतना दबाब डाला कि जामिया मिल्लिया इस्लामिया के यासर अराफत हाल में उनको सुनने के लिए आयोजित व्यक्तियों को पूरा कार्यक्रम ही अन्तिम क्षणों में निरस्त करना पड़ा। लेखक तारिक फतेह ने स्वयं पत्रकारों को बताया कि कुछ 'मुस्लिम रेडिकल्स' उनसे इसलिए रुष्ट थे क्योंकि फिलिस्तीनी नेता यासर अराफात को उन्होंने एक विवादित व्यक्तित्व कहा था और यह भी बेहतर माना था यदि उस सभागृह का नामकरण भी मुगलवंश की समन्वयकारी प्रतिभा दारा शिकोह के नाम पर होता।

तारिक फतेह जो भाषण देने के आमंत्रण पर वस्तुतः प्रसन्न थे, उन्होंने आरोप लगाया कि उन्हें यह लगने लगा है कि दिल्ली के भीतर ही जामिया परिसर में एक ''मिनी–पाकिस्तान'' पनप रहा है तथा जो अत्यन्त चिन्ताजनक है। ''डेली मेल'' की 13 अप्रैल 2013 की प्रत्यक्षदर्शी रिपोर्ट के अनुसार उन्होंने यह भी कहा कि पाकिस्तान में मेरे बोलने पर प्रतिबंध लगाना समझ में आता है क्या जामिया परिसर में भी पाकिस्तान का प्रभुत्व है। ''यह धर्मयुद्ध का मुद्दा नहीं है, विचारों का संघर्ष है। और मेरे विचार में सिर्फ भारत के मुसलमान ही उठ खड़े होकर कह सकते हैं कि यह एक धर्मनिरपेक्ष देश है। पर ऐसा हुआ नहीं।''

तारिक फतेह, धर्मान्धता के विरोधी और सेकुलर इस्लाम के एक नए रूप के प्रवक्ता हैं। उन्होंने एक लोकप्रिय ग्रंथ भी लिखा है जिसका शीर्षक है– ''**चेज़िंग ए मिराज – ट्रैजिक इल्यूजन ऑफ एन इस्लामिक स्टेट**'' इसके साथ ही – *दि ज्यू इज नॉट माई एनेमी*'' ने भी हाल में पश्चिम में उन्हें लोकप्रिय बना दिया है। बांग्लादेशियों की भारत में बढ़ती संख्या के प्रति देश में फैले विरोध को वे नस्लवादी कहने से भी नहीं चूकते हैं। तारिक फतेह भारत को 5000 वर्ष पुराना देश मानते हैं और यहां आकर्षित होकर स्वाभाविक रूप से दुनियाँ भर के लोग आने के लिए लालायित थे जिनमें पारसी और मुस्लिम भी शामिल थे। वेदों के समय से देश की आध्यात्मिक गहराई ने इसे अब तक इतिहास का एक पालना बनाया हैं। आदि–आदि और इसलिए इसे नस्लवादी रुझानों को दूर रखना चाहिए!

पर क्या हमारी केन्द्र सरकार तारिक फतेह की इस टिप्पणी पर कि स्वयं दिल्ली में जामिया मिल्लिया परिसर में एक 'मिनी–पाकिस्तान' जन्म ले रहा है, गम्भीरता से विचार करेगी। जामिया मिल्लिया पर केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय का सीधा नियंत्रण होता है जो अपनी अल्पसंख्यक तुष्टीकरण की जगजाहिर नीति के कारण सोया है और राष्ट्रविरोधी तत्वों पर अंकुश लगाना अपनी प्राथमिकता कभी भी नहीं मानता है। विभाजन के पहले अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी ने पाकिस्तान बनने में अपनी प्रमुख भमिका निभाई थी। यह तथ्य सर आगा के 1954 में '*रसल एण्ड कम्पनी*' द्वारा प्रकाशित संस्मरणों से सत्यापित किया जा सकता है। उन्होंने कहा था कि स्वत्रंत सम्पूर्ण प्रभुत्वशाली पाकिस्तान वस्तुतः अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में ही पैदा हुआ था। क्या जामिया मिल्लिया उसी भूमिका की पुनरावृत्ति करेगी? साफ है कि हमारी सत्तारूढ़ सरकार व विशेषकर कांग्रेस पार्टी इन सम्भावित खतरों से अनभिज्ञ सोई हुई है।

ए–1002, पंचशील हाईट्स
महावीर नगर
कांदिवली (प), मुम्बई–400067
दूरभाष 28606451

पत्र/कविता

''ब्रह्मतेज अरु क्षत्रतेज धारी हो राष्ट्र हमारा''

''इदं में ब्रह्म च क्षत्र, चोभे श्रियमश्नुताम्।
मयि देवा दधतु श्रियमुत्तमां तस्यै तेस्वाहा।।''
(यजुर्वेद32/16)

ब्रह्मतेज अरु क्षत्रतेज धारी हो राष्ट्र हमारा।
विश्व गगन में गुंजित हो, जिससे यशगान हमारा।।

ज्ञान और विज्ञान, विविध विद्यावारिध शिक्षक हों।
विद्वद्गण, सच्चरित, आस्तिकता प्रसार में रत हों।।

राष्ट्र–धर्म उद्धारक ब्राह्मण कुल से धृत हो सारा।
विश्व गगन में गुंजित हो, जिससे यशगान हमारा।।

रणबांकुर बलवन्तवीर, क्षत्रप, रक्षक, तेजस्वी।
अस्त्र–शस्त्र धारी योधा हों, बलिदान ओजस्वी।।

ऐसे वीर क्षत्रियों से रक्षित हो देश हमारा।
राष्ट्राय, जनताहिताय हो जिनका जीवन सारा।।

वे ही राष्ट्र या व्यक्ति विश्व नभ में यश ध्वज फहराते।
जिनमें ब्रह्म–क्षत्र दोनों, हिलमिल निज धर्म निभाते।।

बिना एक के भी अभाव में, राष्ट्र न उन्नति करता।
जैसे एक पंख से पक्षी ऊँचा नहि उड़ सकता।।

अन्यों, अन्यराष्ट्र का वह बन जाता ग्रास विचारा।
अस्तु ब्रह्म अरु क्षत्रतेज धारी हो राष्ट्र हमारा।।

हे परमेश्वर **'इदम् मे'** मेरे '**ब्रह्म च क्षत्रंच**'– ये।
ब्रह्म धर्म अरू क्षत्र धर्म हों, **'उभे'** दुई तेजोमय।।

ताकि **'श्रियम्'**–श्री को, शोभा को '**अश्नुताम्**' मैं पाऊँ।
अपने राष्ट्र, धर्म की रक्षा कर निज धर्म निभाऊँ।।

ब्रह्म–क्षत्र की **'श्रियमुत्तमां'** उत्तम श्री उज्ज्वल।
'मयि देवा'–मुझको विद्वद् जन–गण **'दधातु'**– दे निश्चल।।

हृदय सदन में **'तस्यैते'**– उस तुझ श्री का हर्षितमन।
'स्वाहा' स्वागत करता हूँ, श्री द्युतिमय हो मम जीवन।।

दयाशंकर गोयल
1554डी., सुदामा नगर, इंदौर
पिन– 452009 (म.प्र.)

प्राकृतिक सौंदर्य के देश दक्षिण अफ्रीका से एक पत्र

1 दिसम्बर 2013 रविवार 20 नवम्बर 2013 को मुंबई से 6 घंटे की यात्रा के उपरान्त जोहान्सबर्ग के प्रसिद्ध एयरपोर्ट पर पहुँचे। ये हमारी सांतवी विदेश यात्रा है। हिन्द व अटलांटिक दो महासागरों की उत्ताल तंरगों का स्पर्श करता हुआ अफ्रीका महाद्वीप का दूसरा सबसे बड़ा देश दक्षिण अफ्रीका है। मुंबई से इसकी दूरी सात हजार किलोमीटर है। 1221037 वर्ग किलो मीटर का क्षेत्रफल होने से भारत के यह चार बड़े प्रान्तों के बराबर है। यहाँ की जनसंख्या 55 करोड़ है जिसमें 79% ईसाई .3% पारम्परिक अफ्रीकी आदिवासी धर्म के अनुयायी 1.5% मुस्लिम और 1.2% हिन्दू हैं जिन में लगभग 50 हजार व्यक्ति आर्य समाज से प्रभावित हैं। इस देश की तीन राजधानी है प्रिटोरिया (कार्यपालिका) फोनफोन्टेन (न्यायपालिका) केपटाऊन (विधायिका)। इस देश में 9 राज्य व 52 जिले है और माध्यमिक स्तर तक शिक्षा निशुल्क होने से 89% प्रजा साक्षर है। 23 विश्व विद्यालय हैं। यहाँ की मुदा को Rand (Zar) कहते हैं जो भारत के 6.50 रू. के बराबर है। यहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य को देखने विश्व के 30 लाख पर्यटक प्रतिवर्ष आते हैं। 1487 में पुर्त्तगाल नाविक गर्त्तो लोम्यू के यहाँ पहुँचने से लेकर विदेशियों ने इसका सर्वविध शोषण किया है। डचों व ब्रिटिश अंग्रेजों ने यहाँ के काले आदिवासियों पर तीन शताब्दियों तक अमानवीय अत्याचार किये हैं। भारत, मेडागास्कर, इंडोनेशिया से दासों को लाकर कोड़े मार–मार कर इन से काम करवाया है। 1867 व इसके बाद यहाँ की भूमि पर सोना, हीरा, प्लेटिनियम आदि बहुमूल्य धातुओं का पता चला। पहले छोटे–छोटे कबीलों में चलने वाला देश 1910 में संगठित देश घोषित किया गया। अत्रत्य काले लोगों को पद, शिक्षा, साधन, सुविधा, चिकित्सा, न्याय आदि सभी क्षेत्रों में ये गोरे अंग्रेज़ अपमानित करते थे। इसी का गाँधी जी ने विरोध किया और इन लोगों को संगढित कर आंदोलन को मुखर किया। 31 मई 1961 को महारानी एलिजावेध ने स्वयं को यहाँ साम्राज्ञी घोषित कर वर्षों से कार्यरत् ब्रिटेन के मंत्रिपरिषद् को समाप्त कर अत्रत्य संसद् व चुनाव प्रणाली को मान्यता दे दी। गोरो कालों का वर्ण भेद फिर भी बना रहा। गोरों व यहाँ के लोगों से उत्पन्न गौर वर्णीय लोग जो यहीं बने रहे, उनकी नेशनल पार्टी का वर्चस्व बना रहा। महात्मा गांधी जी द्वारा स्थापित अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस पर प्रतिबंध लगा दिया गया। और श्री नेल्सन मंडेला 27 साल जेल में कैद रहे। विश्व जनमत के आगे विवश हो, 1990 में उन्हें आज़ाद किया गया। बाद में वे देश के राष्ट्रपति भी बने। यहाँ वह स्थान भी हमें देखने को मिला जहाँ उनका प्रथम व्याख्यान सुनने के लिए दस लाख लोग एकत्रित हुए थे। 1905 में भाई परमानन्द जी ने दक्षिण अफ्रीका में आर्य समाज की स्थापना की। 15 मंदिरों सहित आर्य समाज की 26 संस्थायें इस देश में कार्यरत हैं। 99% जन शराबी व माँसाहारी हैं। छोटे से देश में सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त कैसीनो (जुआघर) 25 से ज्यादा है। प्रतिदिन 50 से ज्यादा हत्यायें हो जाती हैं। एक वर्ष में 5 लाख से जयादा कन्यायें दुष्कर्म का शिकार होती हैं। असुरक्षा के भय से 4 लाख सुरक्षाकर्मी, नौ हजार निजी कंपनियों के माध्यम से कार्यरत है जो कि पुलिस व सेना की कुल संख्या से ज्यादा है। दर्शनीय स्थलों में कृत्रिम लहरों की घाटी Valiey of the waves, cango Caves जहाँ हज़ारों वर्षों में चूने के ग्लेशियर बन गये हैं, 7 प्राकृतिक आश्चर्यो में एक Table mountain (मेज की भाँति पर्वत), समुद्री जीव Seal, Penguins (सील व अफ्रीकन पेंग्विन) शुतुरमुर्ग के अंडे जो पाषाणवत् होने से टूटते नहीं हैं,शुतुरमुर्ग की सवारी, पार्लियामेंट कोटनिकल गार्डन में सैकड़ों प्रकार के फूल वृक्षादि आदि, Sky walk शेर व चीते गैंडा आदि को निकट से देखना, Vshaka marine world में साँप मछलिया आदि अपने कोच के आदेश पर डाल्फिन मछली का नृत्य समुद्रतटों के अनेक प्वांइट्स नेल्सन मंडेला जी का घर आदि प्रसिद्ध हैं।

वोट बैंक के लालच में अत्रत्य सरकार आसपास के देश जिम्वाब्वे, नाईजीरिया से घुसपैठ करवा रही है। ड्रग्स व माफिया बढ़ रहे हैं। भ्रष्टाचार से प्रजा पीडित हैं। अंग्रेज़ों के कारण सभ्यता तो आई है पर भाषा धर्म संस्कृति सब नष्टप्रायः हो गये हैं। आर्य समाज के किसी सुयोग्य विद्वान की जो अंग्रेज़ी में पूर्ण अधिकार रखता है आवश्यकता है।

इंसान के अज्मो हिम्मत से जब दूर किनारा होता है।
तूफान में छूटी किश्ती का भगवान सहारा होता है।

आचार्य आनंद पुरुषार्थी
आर्य समाज स्वामी दयानन्द बिल्लडींग
डरबन–4001 साऊथ अफ्रीका

****

☞ पृष्ठ 6 का शेष

सत्य व अहिंसावादी...

बाहर गए होते थे तो उनके पत्रों को देखकर मैं कुछ पत्रों का उत्तर दे दिया करता था। उन्हीं दिनों जोधपुर के भैरव सिंह जी (आर्य समाज गुलाब सागर जिनके पूर्वज जोधपुर के राजकर्मचारी थे। के कई पत्र जिज्ञासु जी के नाम आए, उनका उत्तर मैं देता रहा, इस कारण वह मुझे उनका पुत्र समझने लगे। उन्हीं के आग्रह पर मैं आर्य युवक समाज का साहित्य विक्रयार्थ आर्य महा सम्मेलन मेरठ गया। यह सम्मेलन 1972 के लगभग हुआ था। वह यहां पर जोधपुर राज्य के उस रिकार्ड की नकलें लाए थे जो स्वामी से सम्बन्धित था। वह सारा रिकार्ड मुझे दिखाते हुए पूरी तरह समझाया भी तथा यह भी कहा कि इसे (आपके पिता जी के अतिरिक्त और कोई समझ नहीं सकता। मैंने यहां पर उन्हें बताया कि जिज्ञासु जी मेरे पिता नहीं साथी हैं।) यहां उन्होंने मुझे स्वामी को विष देने सम्बन्धी दस्तावेज भी दिखाए। इन सब के आधार पर मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि स्वामी जी को भयंकर विष दिया गया। विष दिलवाने वाली वही वैश्या थी जिसे राज के दरबार में उन्होंने देखा थी। उसका नाम नन्हीं ही था। अतः यह कहने को कुछ भी नहीं रह जाता कि वह वैश्या नहीं थी या उसका नाम नन्हीं नहीं था या फिर उसने विष दिलवाया ही नहीं। यदि कोई ऐसा कहता है तो इसका यह प्रयास तत्कालीन जोधपुर राज्य के वर्तमान लोगों को प्रसन्न करने व जोधपुर पर लगे कलंक को धोने मात्र का ही हो सकता है। इसके अतिरिक्त अन्य कोई प्रयोजन नहीं हो सकता।

यहां एक बात और लिखना चाहूंगा कि भैरव सिंह जी के भरसक प्रयत्नों के बाद भी उन दिनों उनका जिज्ञासु जी से सम्पर्क नहीं हो सका। वह यह सब स्वामी जी से सम्बन्धित रिकार्ड उन्हें दिखाने की अभिलाषा मन में संजोए ही इस संसार से विदा हो गए। जाने से पहले यह सब मुझे दिखाकर आर्य जगत को यह विश्वास अवश्य दे गए कि कोई तो इस कपट पूर्ण व्याख्यान का विरोध कर सत्य को जन–जन तक ला सके। सो आज मैंने उनकी यह अभिलाषा इस लेख की अन्तिम पंक्तियों में पूर्ण करने का प्रयास करते हुए एक बार फिर यह बात कहता हूं कि स्वामी जी को जीवन में अनेक बार मारने की असफल चेष्टाएं की गई किन्तु अन्त में जोधपुर में नन्हीं वैश्या ने स्वामी जी के रसोइये को अपने साथ मिलाकर जो विष दिलाया, वही विष स्वामी जी के बलिदान का कारण बना। विष दिलवाने वाली दरबारी वैश्या ही थी, उसका नाम नन्हीं ही था तथा उसी ने रसोइये जगन्नाथ से विष दिलवाया। विष देने वाले इस रसोइये का नाम जगन्नाथ ही था। आर्य समाज तथा जोधपुर के इतिहास की यह एक सत्य घटना है। लाख प्रयास करने पर भी इसे झुठलाया नहीं जा सकता। जो इसे झुठलाने का प्रयास करते हैं वे कुत्सित मानसिकता वाले स्वार्थी ही हो सकते हैं।

– 104 शिप्रा अपार्टमेंट, कौशाम्बी 201010, गाजियाबाद मो. 09718528068

☞ पृष्ठ 8 का शेष

शास्त्रार्थ महारथी...

प्रतिमूर्ति भारती देवी की इस न्यायप्रियता पर चकित थे। श्रद्धा और भक्ति से उपस्थित जनो ने पूछा–देवी भारती, आपने अपनी अनुपस्थिति मे हार और जीत का वृतान्त कैसे जान लिया।?

देवी भारती बोलीं–"शास्त्रार्थ में मनुष्य को क्रोध उसी समय आता है जब घबराहट–निराशा होती है। और घबराहट पक्ष की निर्बलता पर होती है। मिश्र जी क्रोधित हैं। उनका मुख रूपी फूल कुम्हलाया हुआ है जबकि आचार्य शंकर का मुख प्रातः कालीन खिले हुऐ फूल के समान है और वे शान्तचित्त बैठे हुए हैं। इससे उनकी स्पष्ट जीत दृष्टिगोचर हो रही है"

विद्वानों ने भारती देवी के इस निष्पक्ष निर्णय पर हर्ष ध्वनि लगाई "भारती देवी की–जय–जयकार" से भवन गूंज उठा। भारती देवी ने मिश्र जी की पराजय की घोषणा तो कर दी, परन्तु उनकी अर्धांगिनी होने के कारण उनसे रहा न गया। उन्होंने आचार्य शंकर को अपने से शास्त्रार्थ के लिये ललकारा। शास्त्रार्थ चलते–चलते "काम शास्त्र" पर शास्त्रार्थ चला, जिसमें देवी भारती ने आचार्य शंकर को निरुत्तर कर दिया। परन्तु अपनी उदारता से भारती देवी ने आचार्य शंकर को उत्तर देने के लिये एक वर्ष की अवधि प्रदान की, [धन्य है भारती देवी! तू धन्य है। क्या भारतीय देवियां भी तेरे गुणों एवं पाण्डित्य का अनुसरण करेंगीं]?

एक वर्ष के पश्चात आचार्य शंकर का उत्तर मिलने पर मण्डन मिश्र जी तथा उनकी पत्नी देवी भारती ने वैदिक–धर्म की दीक्षा ली और दोनों पत्नी–पति आयु पर्यन्त वैदिक–धर्म का प्रचार–प्रसार करते रहे। और इसी तरह धर्म प्रचार करते हुये अपनी जीवन लीला समाप्त की।

जगदीश चन्द्र "वसु" पानीपत

निराश्रित व गरीब बच्चों को गर्म वस्त्र दिए

असहायों, गरीबों, विकलांगों व निराश्रितों की सेवा से मानसिक व आत्मिक सुख मिलता है। हमें ईश्वर की बनाई इन साक्षात मूर्तियों की सेवा कर हर संभव सहायता करनी चाहिए।'' विचार आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुन चढ्ढा ने वीर सावरकर नगर स्थित निराश्रित बालगृह के आसपास निवास करने वाले परिवारों के बच्चों को गर्म वस्त्र वितरित करते हुए व्यक्त किए।

समिति के प्रचार सचिव अरुण पांडेय ने बताया कि आर्य समाज का दल जिला प्रधान अर्जुन देव चढ्ढा के साथ वीर सावरकर नगर पहुंचा। इस बस्ती के बच्चों को आर्य समाज की ओर से गर्म टोपे , मौजे, कपड़े, दस्ताने, मफलर आदि वितरित किए गए। वस्त्र पाकर बच्चे बहुत प्रसन्न हुए।

जिला सभा के मंत्री प्रहलाद बाहेती ने बताया कि वस्त्र वितरण का यह कार्यक्रम मकर संक्रांति पर्व तक चलता रहा।

हृदय रोगियों के लिये विशेष संकेत

● **देवराज आर्यमित्र**

1. धूंआ और धूल से बचकर रहें। धूम्रपान और मदिरापान कभी न करें।
2. पेट को साफ रखें अर्थात् आंतों में मल जमा ना होने दो। पानी खूब पियें ताकि मल–मूत्र जमा न हो।
3. भोजन रेशेदार तरल ताजा खायें। शुष्क गरिष्ठ ना खायें। जैसे तले हुये पूरी, कचौड़ी, पकौड़े इत्यादि/फल और सब्जियों का अधिक सेवन करें। चीनी, नमक और मैदा कम मात्रा में प्रयोग करें।
4. चिन्ता को छोड़कर चिन्तन करें। तनाव (Tention) से दूर रहने के लिये सकाराम्क विचारधारा को अपनाओ। किसी से ईर्ष्या–द्वेष ना रखें। सब के साथ प्रेम पूर्वक रहें।
5. वजन (Weight) को अपनी आयु और लम्बाई के अनुसार स्थिर रखो। वनज को सही ठीक रखने के लिए अपनी शक्ति के अनुसार व्यायाम करें। प्रातः सायं का भ्रमण सार्वोत्तम व्यायाम है।
6. रक्तचाप (Blood Pressure) रक्त के दबाव को घटने या बढ़ाने मत दो। टेंशन (तनाव) के कारण या अधिक मीठा पकवान खाने से बढ़ता है।
7. कोलेस्ट्रॉल की मात्रा को बढ़ने मत दो। इसको सामान्य रखने के लिये अधिक घी, तेल वाले पदार्थ मत खाओ। अंग्रेजी में कहा है कि Do not worry hurry and curry, अर्थात् गम मत करो, जल्दी मत करो और अधिक समान मत ले जाओ। अपने को हल्का सरल और चिन्ता मुक्त रखो। पूर्ण विश्राम करो। ये बिन्दु दीर्घ अनुभव के बाद लिखें हैं।

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11/6066/2012-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103/2012-14
POSTED AT N.D.P.S.O. ON 29-30 /01/2014
रजिस्ट्रेशन नं. आर0 एन0 आई0 39/57

डी.ए.वी काशीपुर में लगा चरित्र निर्माण एवं वैदिक चेतना जागृति शिविर

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल काशीपुर में चरित्र निर्माण एवं वैदिक चेतना जागृति शिविर का आज विधि पूर्वक समापन हो गया। शिविर में डी.ए.वी. के 25 छात्र एवं 25 छात्राओं ने भाग लिया। शिविर का मुख्य उद्देश्य छात्र–छात्राओं को वैदिक संस्कृति की जानकारी देना एवं भारतीय संस्कृति की महता से अवगत कराना था। विद्यालय द्वारा विषय विशेषज्ञों का प्रबन्ध किया गया था जिन्होंने अलग–अलग विषयों पर छात्र छात्राओं का ज्ञानवर्द्धन किया। शिविर का प्रारम्भ हवन द्वारा किया गया इसके उपरान्त विभिन्न दिवसों पर व्यायाम, योग, एवं शारीरिक शिक्षा का प्रशिक्षण दिया गया। पर विभिन्न शिक्षकों द्वारा चरित्र निर्माण, वैदिक ज्ञान, अनुशासन, दण्ड एवं पुरुस्कार, बड़ों का आदर, पानी संरक्षण, साफ सफाई, अज्ञानता, धूमपान, व्याधियों से दूर रहना आदि मुद्दों एवं आर्य समाज के महान व्यक्तिवों जैसे दयानन्द सरस्वती, महात्मा हंसराज, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा आनन्द स्वामी, स्वामी विरजानन्द के बारे में ज्ञान दिया गया विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री एस.के श्रीवास्तव ने वैदिक धर्म के विषय मे बताते हुए छात्रों को संध्या, स्वाध्याय, सत्संग एवं सेवा का महत्व के बारे में बताया तथा शिविर के सफल संचालन के लिए भारती अरोड़ा, कमल किशोर जोशी की प्रशंसा की तथा विश्वास व्यक्त किया कि भविष्य में इस तरह की मूल्यपरक शिक्षा की व्यवस्था होती रहेगी।

आर.आर बावा डी.ए.वी. कॉलेज़, बटाला में हवन यज्ञ

आर.आर.बाबा डी.ए.वी. कॉलेज फॉर गर्ल्ज़, बटाला में यू.जी.सी. के तत्वावधान में स्थापित स्वामी दयानन्द स्टडीज़ सैंटर की डायरैक्टर डॉ. (श्रीमती) अजय सरीन के निर्देशानुसार को आर्डिनेटर श्रीमती राज शर्मा द्वारा कालेज यज्ञशाला में नववर्ष के प्रथम दिवस पर हवन यज्ञ आयोजित किया गया। इस सुअवसर पर यजमान बनी प्रधानचार्या ने वहां उपस्थित समस्त कर्मचारियों को डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी, नई दिल्ली, लोकल मैनेजिंग कमेटी व अपनी ओर से नव वर्ष की बधाई दी और साथ ही साथ सभी को संस्था के लिए पूर्ण उत्साह एवं ईमानदारी से काम करने के लिए प्रोत्साहित भी किया। हवन यज्ञ प्रो. सुनील दत्त जी ने करवाया। इस अवसर पर श्री धर्मपाल सुपरिनटैंडेंट जनरल, श्री तरमेश शर्मा सुपरिनटैंडेंट लेखा विभाग, श्री बचन लाल, श्री रमेश कुमार, श्री जितेन्द्र कुमार, श्रीमती निर्मला देवी, श्री संदीप कुमार, श्री संजीव कुमार एवं अन्य समूह स्टाफ ने अपनी उपस्थिति से हवन का लाभ उठाया, अन्त में प्रसाद वितरण हुआ।

गुरुकुल में वेदभाष्यकार की दौहित्री का आगमन

वेद के अनुशीलन में अनुरक्त हॉलैण्ड से बहिन इन्दु जी आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंज में पधारी और एक सप्ताह तक गुरुकुल में रहीं।

अथर्ववेद भाष्यकार एवं गोपथ ब्राह्मण भाष्यकार पं. क्षेमकरण त्रिवेदी जी से सभी सुपरिचित हैं। उनकी पौत्रवधू माता सुशीला जौहरी जी थीं जिनकी पुत्री श्रीमती इन्दु जी हैं।

वेदों में कई स्थल गम्भीर हैं। बहिन इन्दु जी को कहीं से यह ज्ञात हुआ कि इसकी समुचित जानकारी आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंज से हो सकती है। एतदर्थ वे अपने पतिदेव श्री ओंकारनाथ जी के साथ गुरुकुल में पधारीं।

इन स्थलों के लिए उन्होंने वाराणसीस्थ पाणिनि कन्या महाविद्यालय सहित अनेक विदुषी, विद्वानों से वेद के उन स्थलों को जानने का पूरा प्रयास किया, पर वे सन्तुष्ट नहीं हुई। उनके आर्य कन्या गुरुकुल में आने पर पू. आचार्या सूर्या देवी जी चतुर्वेदा एवं पू. आचार्या धारणा याज्ञिकी जी ने उनके वेद के ज्ञातव्य विषयों को भलीभाँति अवगत करा दिया।

डी.ए.वी. द्वारका में रक्तदान शिविर

इन्टरैक्ट क्लब' के तत्वावधान में डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल द्वारका में रोटरी क्लब द्वारा प्रायोजित एक स्वैच्छिक रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। 'रक्तदान महादान' है छात्रों एवं अभिभावकों में यह भावना भरने के लिए विद्यालय में एक पोस्टर बनाओ एवं स्लोगन लेखन (प्रेरक पंक्तियाँ लेखन) प्रतियोगिता का आयोजन किया गया; जिसमें क्रमशः छठी से आठवीं तथा नवीं–दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों ने भाग लिया।

रक्तदान शिविर का उद्घाटन रोटरी क्लब के अध्यक्ष श्री पी.के गुप्ता ने किया। विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती मोनिका मेहन ने स्वयं रक्तदान करके इस पुनीत कार्य के लिए अध्यापकों, कर्मचारियों और छात्रों के प्रेरित किया। अभिभावकों ने रक्तदान करके अपना सहयोग दिया।

श्री पी.के गुप्ता ने प्रतियोगिता में विजयी छात्र–छात्राओं को नकद पुरस्कार एवं प्रशस्तिपत्र देकर सम्मानित किया, उन्होंने विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती मोनिका मेहन, शिक्षक, शिक्षिकाओं तथा विद्यार्थियों के इस प्रयास की बहुत प्रशंसा की। क्लब के सदस्यों ने इस आयोजन को सफल बनाने में अथक प्रयास किया।

मुद्रक व प्रकाशक – **श्री प्रबोध महाजन,** सभा मंत्री द्वारा **मदन गोयल** के प्रबंध में **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 से प्रकाशित। स्वामित्व – आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 (दूरभाष : 23362110, 23360059) सम्पादक – **श्री पूनम सूरी**